तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंकः २ वर्षः १८ १५ जनवरी १९८२
दीवाना
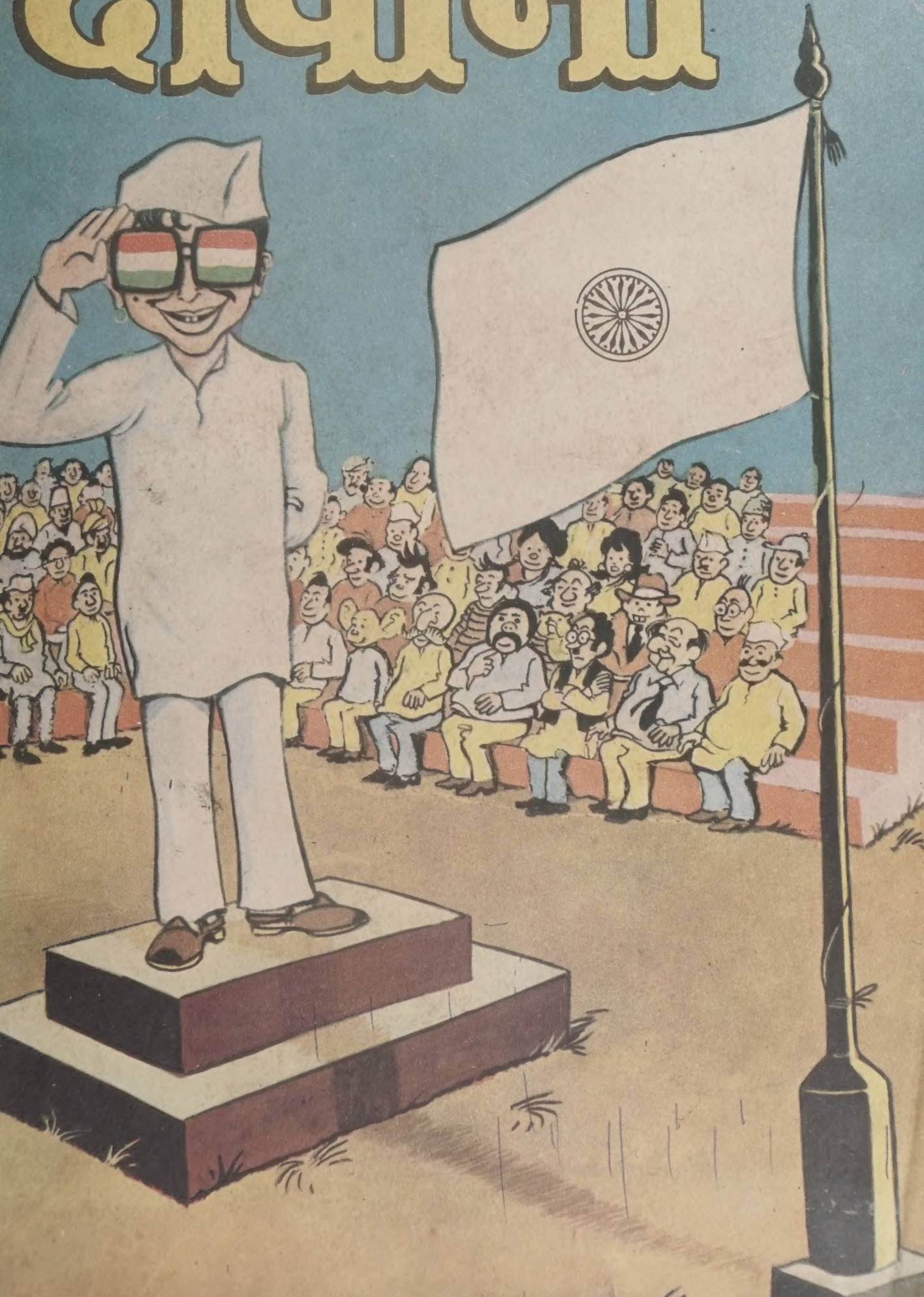
आपका भविष्य

शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र देवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष: नई योजनाओं पर विचार-विमर्श, आय व्यय में समानता रहेगी, यात्रा सफल, विशेष व्यय का सामना, नातेदारों से मेलजोल, लाभ समय पर मिलता रहेगा, घरेलू एवं बाहरी उलझनें पेश आएंगी।

वृष: आय यथार्थ, हालात तकरीबन ठीक ही चलेंगे, यात्रा में सुख, आर्थिक .. .ता नियंत्रण में रहने पर ी धन की .. महसूस होगी, मित्रों से सह.. .. ..व बराबर, कारोबार सुधरेगा, लाभ .. च्छा होगा।

मिथुन: रुकावटों एवं परेशानियों का सामना, लाभ खर्च में समानता रहेगी, कुछेक परेशानियों के बावजूद भी हालात ठीक होते जाएंगे, यात्रा सफल, लाभ अच्छा, व्यय यथार्थ होगा, कारोबार से लाभ बढेगा।

कर्क: लाभ यथार्थ किन्तु खर्चा काफी होगा, कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, स्वभाव में गुस्सा बिना कारण ही रहेगा, यात्रा न करें, भाई सहयोग देंगे, कारोबार ठीक चलने पर भी लाभ पूरा न मिलेगा. हालात सुधरेंगे।

सिंह: शत्रु एवं झगड़े आदि से बचें, मिश्रित फल मिलेंगे, लाभ अच्छा होगा, लाभ में वृद्धि एवं कारोबार भी सुधरेगा, व्यय यथार्थ, विरोधी मुंह की खाएंगे, यात्रा सफल, लाभ देर से।

कन्या: यात्रा की आशा है, हालात ठीक चलेंगे, घरेलू सुख अच्छा मिलेगा, व्यर्थ की उलझनों से मन में घबराहट, नई. वस्तुओं की खरीद पर व्यय होगा। शुभ काम पर खर्च अधिक, दशा अनुकूल रहेगी।

तुला: यात्रा करनी ठीक नहीं, सेहत बिगड़ेगी, परेशानी काफी रहेगी, आर्थिक लाभ अच्छा होगा एवं कामकाज भी सुधरेगा, परिश्रम काफी रहेगा, नातेदारों से मेलजोल, अफसरों का परामर्श लाभप्रद।

वृश्चिक: खर्चा बढ़ेगा, कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा हो सकती है, नातेदारों से कुछ परेशानी, खर्चे पर नियंत्रण रखें वर्ना तंगी आएगी, झगड़े आदि से बचें, कारोबार पहले जैसा ही चलेगा।

धनु: मनोरंजन आदि पर व्यय, समय भी अच्छा व्यतीत होगा, परिश्रम द्वारा कठिन काम भी बन जाएंगे, यात्रा सफल, लाभ आशा अनुसार मिलेगा, विजय प्राप्त करेंगे, व्यर्थ की परेशानी।

मकर: हालात सुधरने लगेंगे, कोबार भी ठीक चलेगा, खर्चा काफी रहेगा, कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा करनी पड़ सकती है, सफलता कुछ देर से मिलेगी, आय यथार्थ लाभ के साथ साथ खर्चा भी रेहगा।

कुम्भ: आय-व्यय में समानता रहेगी, यात्रा सफल परन्तु सावधानी से करें, हालात ठीक होंगे और कारोबार भी सुधरेगा, नातेदारों से मेल जोल, सफलता मिलती रहेगी, संघर्ष काफी रहेगा, सफलता मिल जाएगी।

मीन: आय में वृद्धि, सफलता देर से मिलेगी, दौड़धूप काफी रहेगी, व्यर्थ को परेशानी बनी रहेगी, लाभ आशा से कम, यात्रा पर न जाएं, मित्र सहयोग देंगे कारबार यथापूर्व ही चलेगा, हालात सुधरेंगे।

82

दीवाना के मुख्यपृष्ठ पर नये वर्ष की शुभ कामनाओं के साथ चिल्ली मन को भाया। जब हम मिनिस्टर बने पढ़ कर पसन्द आई, आपस की बातें, आदिमानव इत्यादि पुराने फीचर नये फीचरों से मिल कर दीवानों को दीवाना बनाने में सफल रहे।

पत्रिका को बड़ा करने का धन्यवाद दीवाना अंक एक पहले की तरह दीवानें के बड़े साइज में देख कर मन खुशी से बाग बाग हो गया. क्यों और कैसे, धारावाहिक चांदी की मकड़ी का रहस्य, फैन्टम इत्यादि बहुत पसन्द आये. खेल खेल में फीचर से अच्छी जानकारी प्राप्त हुई उसके लिये धन्यवाद।

नये वर्ष की शुभ कामनाओं सहित—

दीपक कुमार-बिहार

दीवाना अंक एक में चिल्ली को शुभकामनाओं सहित आये देख बहुत ही प्रसन्ता हुई. परोपकारी, रंग भरो प्रतियोगिता और दीवाना के सभी अन्य फीचर अत्यन्त रोचक रहे. मोटू-पतलू और टाइम मशीन के तो बस क्या कहने। हंसते हंसते पेट में दर्द हो गया. वाकई दीवाना एक रोचक पत्रिका है।

राजेन्द किशन भप्पी अम्बाला

दीवाना अंक एक प्राप्त हुआ, मोटू-पतलू सिलबिल-पिलपिल, परोपकारी, लल्लू सभी को पढ़ कर आनन्द प्राप्त हुआ। जिन्दगी समझो अन्दाजे क्रिकेट में तो बस बहुत ही मजा आया। कितना अच्छा हो यदि फैन्टम के कारनामे, कुछ अधिक दिया करें. सिलबिल पिलपिल और आपस की बातें अच्छे रहे। अच्छा अंक छापने केलिये बधाई।

रमेश शर्मा—नई दिल्ली

दीवाना का एक बहुत ही पुराना पाठक हूं मुझे चिल्ली और दीवाना हर हाल में पसन्द आता है। पहले बड़ा साइज फिर छोटे होने पर उसकी सुन्दरता और अब फिर से उसे दीवानों के अनुरोध पर बड़ा कर देने के लिये धन्यवाद. जिस रुप में भी दीवाना हमें मिलता है हमारे मन को प्रसन्न किये बिना नहीं रहता। सचमुच दीवान एक बहुत ही ज्ञानवर्धक और रोचक पत्रिका है।

राजेन्द्र, किशन-भटिन्डा

दीवाना का नया रूप नये वर्ष के साथ पा कर मन को बहुत ही प्रसन्नता हुई। दीवाना के रूप और मनोरंजक सामग्री की भरमार दीवानों को दीवाना बनाये रखती—सुन्दर पत्रिका छापने के लिये धन्यवाद।

सोहन शर्मा—जयपुर

दीवाना का अंक एक प्राप्त हुआ, क्या खूब सामग्री लि कर नये वर्ष की शुभकामनाओं सहित दीवाना अपने दीवानों के पास पहुंचा, ऐसी अनोखी मनोरंजक पत्रिका जिसका हर फीचर एक से एक बढ़ कर मनोरंजक हो आपके ही बस का है। इसके लिये हम सबकी ओर से हार्दिक बधाई—आशा है दीवाना में नये वर्ष में और भी नये-नये फीचर पढ़ने को मिलेंगे।

पूरनचन्द आहलूवालिया पंजाब

दीवाना का अंक एक पढ़ा. नये साल का मुख्य पृष्ठ अत्यन्त प्रभावशाली रहा. दीवाना का अंक बड़ा कर देने के लिये बधाई। इससे हम दीवानों को अधिक मनोरंजक सामग्री मिलती है. जब हम मिनिस्टर बनें, लघु कथा बहुत पसन्द आई।

जिन्दगी क्रिकेट अन्दाज में और सभी नये फीचर अत्यन्त पसन्द आये।

रमेश बहल-करनाल

अपवाद

मुख पृष्ठ पर

चिल्ली को जब मिला एक मौका
करिश्मा नया दिखाने का
सरकार ने कहा गणतंत्र दिवस पर
परेड को सैलूट लगाने का
बनकर नेता आये मंच पर
इकत्तीस तोपों की मिली सलामी
मारी नजर तिरंगे पर जब
रंग उतर आये चश्मे पर सब।

अंक २ वर्ष, १८ १५ जनवरी १९८२

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : ३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक : १८ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

उमा शंकर राजभर, तेतुलिया कोलियरीः अच्छे चाचा जी, क्या मृत्यु जीवन का अंत है?

उ.: हमें तो इतना पता है कि आजकल की जीवन एक लम्बी मृत्यु का आरम्भ है. इसके लिये किसी शायर ने कहा हैः

जिन्दगी है या कोई तूफान है,
हम तो इस जीवन के हाथों मर चले.

अमरजीत सिंह, कुमारधूबीः चाचा जी, क्या भगवान मन्दिर, मसजिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे के अतिरिक्त और किसी जगह नहीं बसता?

उ.: वास्तव में और किसी जगह नहीं बसता. उसके लिये यही जगहें सुरक्षित हैं. भगवान यहां से बाहर निकले तो लोग उसकी जेब काट लें.

संजय कुमार सिंह, पटनाः चाचा जी, स्वर्ग क्या है?

उ.: सदाचारी लोगों के लिये ऊपर वाले का बनाया 'फाईव स्टार होटल.''

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुरः स्कूल में मास्टर की डाट खाता रहा, घर पर बाप की फटकार खाता रहा. शादी हुई तो अब पत्नी डांटती है. क्या मैं जीवन भर डांट खाने के लिये ही पैदा हुआ हूं?

उ.: इस में हरज भी क्या है. मिलावट के जमाने में आजकल यहीं एक शुद्ध चीज रह गई है खाने को। एक शायर ने कहा हैः

खूने दिल पीने को और लख्ते जिगर खाने को,
ये गिजा मिलती है लैला तेरे दीवाने को.

बालकिशन पारीक, बीकानेरः आप की टांट पर केवल चार बाल हैं. इनका क्या राज है?

उ.: जवानी के दिनों में जिस से बाल बाल बचना था उसे बवाले जान बना बैठे. फिर उसने हमारा सर फुटबाल बना दिया और बालगोपाल वाले होते तक हमारा सर चांद का टुकड़ा हो गया.

नारी, नारी के लिये पहेली कब बन जाती है?

उ.: जब वह अपने पति की मूर्खता कुछ इस तरह बताती है देखा बहन, इन्हें कैसी बेकार चीजे खरीदने का शौक है दो साल पहले इन्हों ने आग बुझाने की एक मशीन खरीदी थी. वह दिन है और आज का दिन. घर में एक बार भी आग नहीं लगी है.''

सुरेश खुराना पप्पी, जीन्दः एक आदमी दूसरे को किस हाल में देख कर जलता है?

उ.: दूसरे को अपने सुख पर जलता देख कर.

मोहम्मद हुसैन, भिश्ती, बीकानेरः माई डीयर चाचा जी, आप के सर के बाले किस गम की नजर हुये हैं?

उ. : उसकी नजर, जिस के बारे में एक शायर ने कहा है

दिल में फरेब, लब पे तबरसुम, नजर में प्यार,
लूटे गये शमीम बड़े एहतमाम से.

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वहीं के वहीं

उस दिन संगीत मास्टर पोपट लाल जी को रिसड़ा किसी प्रोग्राम के सिलसिले में जल्द पहुंचाना था पर कुछ और कार्य से थोड़े लेट स्टेशन पहुंचना पड़ा। वे कुछ अपने आप को जिनियस भी समझते थे, लगे अपनी बुद्धि दौड़ाने। आचानक अपने बगल से पास होते एक टिकट चेकर से पूछ ही बैठे,'' चैकर बाबू जी, मुझे आधे घन्टे में रिसड़ा पहुंचना है और अभी चालीस मिनट बाद ही कोई लोकल ट्रेन है। आप क्या मेरी कुछ मदद कर सकते हैं?''

''देखिये, आप को क्या राय दूं? और फिर वे लगे प्लेटफार्म की ओर नजरें दौड़ाने जैसे किसी मैदान में एक दक्ष बेट्समैन बैटिंग करते समय अपने चारों ओर फैले फील्डरों का मुआयना करता है। आचानक वे मुस्करा उठे, ''देखिए, वह जो सामने चार नम्बर प्लेटफार्म पर जो बर्दवान एक्सप्रेस खड़ी है, उसी पर चढ़ जाइये . . .।''

''पर वह तो रिसड़ा रुकती ही नहीं।'' बीच में ही पोपट लाल गरज उठे।

उस ट्रेन में चढ़ जाइए, वह सीधे आ श्रीरामपुर ले जायगी। श्रीरामपुर से एक स्टेशन पीछे है, वहां से किसी डा से दो चार मिनट में रिसड़ा पहुंच देखिए, सिगनल हो चुकी है। . . .।''

उधर ट्रेन ने सीटी दी इधर पोपट लपक कर एक बोगी में जा बैठे। ट्रेन मस्तानी चाल पर भागने लगी। जब कोई क्रासिंग आती वह भरत नाट्यम दिखा देती। पन्द्रह मिनट में ही श्रीरामपु लगी।

पोपट लाल जी ट्रेन से उतरे। डाउन फर्म पर एक ट्रेन खड़ी थी, वह लपक उसी में जा बैठे। उनके चेहरे पर मुस्क साफ झलकने लगा जैसे टैस्ट मैच में शानदार कैच पकड़ ली हो।

रिसड़ा आने वाली थी। अपने को सम्हालने लगे, पर यह क्या? वे पड़े, क्यों भाई, यह ट्रेन रिसड़ा नहीं रुक क्या?'' अपने बगल में खड़े एक सज्ज पूछा।

''जी नहीं, यह सीधे हावड़ा रुके यह सुनते ही वे अपने आप में झल्ल और धम्म से एक किनारे जा बैठे।

—गोपाल

लल्लू

बेटा लल्लू तुम कब तक गले में यह गिटार लटकाये फिरोगे ? देखो मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूं, मेरा हाल तुम्हारे सामने है। मुझसे अपना शरीर ही नहीं सम्भल रहा है। मेरे पैंशन से कब तक घर का खर्च चलेगा ? तुम्हें अब रोजी की चिन्ता करनी चाहिये।

यस डैडी

देखो यह बात आज तक मेरे दिमाग में नहीं आई, मैं बहुत लापरवाह आदमी हूं। अपनी जिम्मेवारी भूल गया। बुड्ढा ठीक ही तो कह रहा था।

लेकिन बुड्ढा है कमाल का। कैसी दिल को चुभ
कह गया। उसे कैसे पता लगा होगा ?
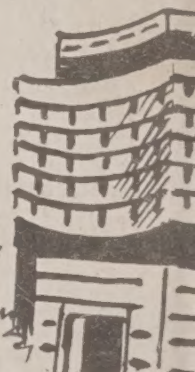
मोटू पतलू

काल चक्र में

पिछले दिनों चार लाख आगे के युग का एक वैज्ञानिक बूबलाबू टाईम मशीन द्वारा हमारे युग में आया था और मोटू-पतलू और उनके साथियों को पकड़ कर दो लाख दस हजार साल आगे के युग में ले गया था. वहां बूबलाबू बन्दरों के चुंगल में फंस गया था. मोटू-पतलू ने देखा, उस जामने के लोग विज्ञान में बहुत प्रगति कर चुके थे. वहां स्पेस शटल हमारे जमानें के स्कूटरों की तरह आकाश में दौड़ रहे थे. उस समय वहां किसी और उपग्रह से आये बन्दरों और धरती पर रहने वाले प्राणियों में थमासान युद्ध चल रहा था. दूसरे उपग्रह से आये एक अंतरिक्षयान ने बड़ी-बड़ी बिल्डिगों को तहस-नहस कर दिया थां सुरक्षा दल के फौजियों की लाशें बिछा दी थीं. फिर इस युद्ध में धरती के अंतरिक्ष बेड़े ने दूसरे उपग्रह के अंतरिक्ष यान को चूर चूर कर दिया था.

यह हंगामा देख कर मोटू, डाक्टर झटका और चेला.राम तो भाग खड़े हुये थे, पर पतलू, घसीटा राम और जूडो मास्टर सोचते ही रह गये थे. और फौज की एक गश्त करने वाली टुकड़ी ने उन्हें पकड़ लिया था. उन्हें बचाने के लिये मोटू, डा. झटका और चेला राम ने मरे हुये फौजियों के कपड़े पहने और वहां की फौज में जा घुसे.

फौज के कमांडर ने उन्हें पुलिस की सहायता के लिये ब्रेनवाशिंग यूनिट में भेज दिया. वहां पहुंच कर उन्होंने देखा वहां के एक बन्दर को इलैक्ट्रानिक यंत्रों में जकड़ लिया था. वे उसका दिमाग साफ करे उस से यह उगलवाना चाहते थे कि वह कौन से उपग्रह से आया है, यह जानने के लिये बन्दर पर बिजली के करंट के इतने तेज झटके दिये कि वह बेचारा दम तोड़ गया.

बन्दर के बाद अब घसीटा राम, पतलू और जूडो मास्टर की बारी थी. उन का ब्रेन वाश कर के वहां के वैज्ञानिक उन से भी यह जानना चाहते थे, कि वे कहां से आये हैं, और क्यों आये हैं? इसके बाद के हंगामे आगे देखिये.
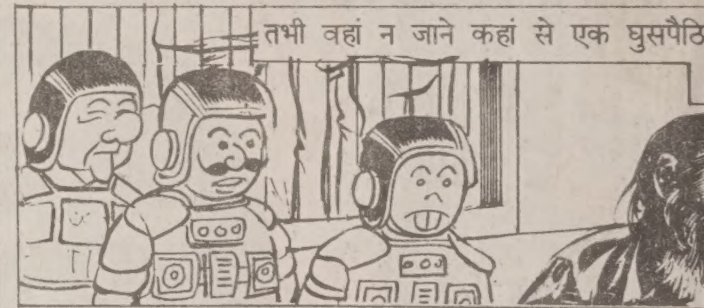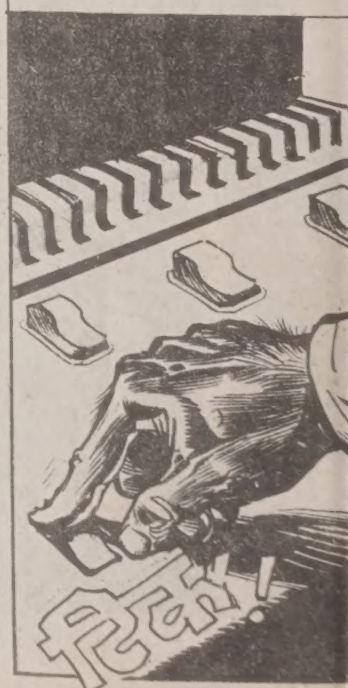
ल के तमाम दरवाजे खोल दिये.
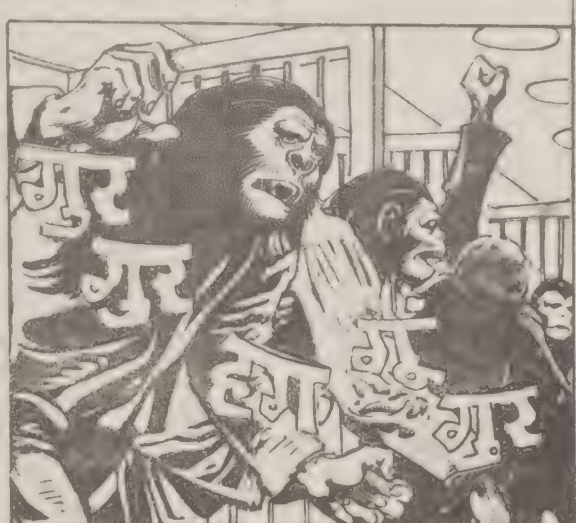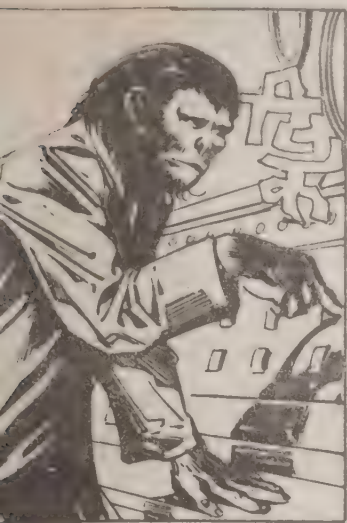
ल भर दिया मुरारजी डेसाई ने ? क्या भर दिया
माल में मुझे भी तो दिखाओ?
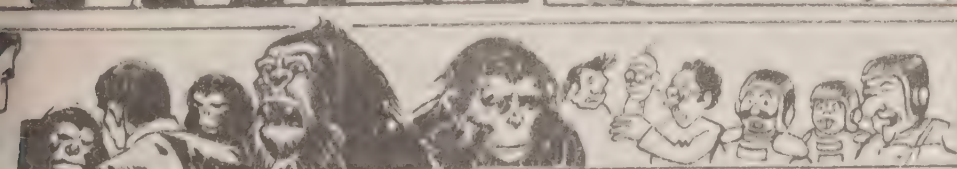
वे सिपाहियों पर टूट पड़े थे.

फिर उसने बेहोश वैज्ञानिक को इलैक्ट्रानिक मशीन पर सैट कर दिया.

ब्रेन वाशिंग यंत्रों के तार उस पर फिट किये
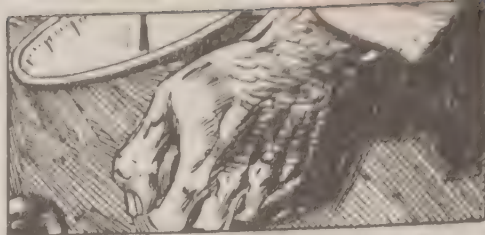
फिर यंत्र को करंट का ऐसा भरपूर झटका दिया कि बेहोश वैज्ञानिक की चीख निकल गई.

और दूस
पल व
चुका

बाहर बन्दरों और पहरेदार सिपाहियों में जम कर लड़ाई हो रही थी.

इस लड़ाई में बन्दरों का पलड़ा भ

वे सब कुछ तहस-नहस करके वैज्ञानिकों और पहरेदार सिपाहियों को मार रहे थे.

अब उनके पास खतरनाक हथियार थे.

जो आग उगल रहे थे.

वे पहरेदार सिपाहियों को बेदर्दी से भून रहे थे.

आआआआआह्!!
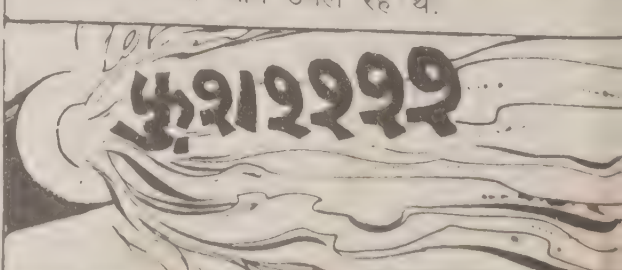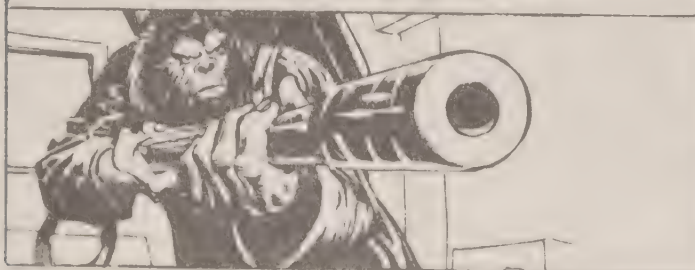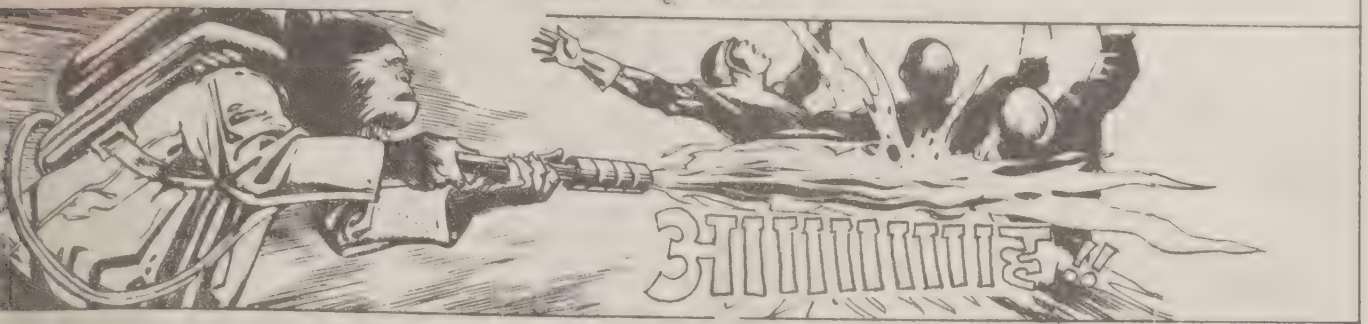
टैंकों को हमले के लिये
ाओ
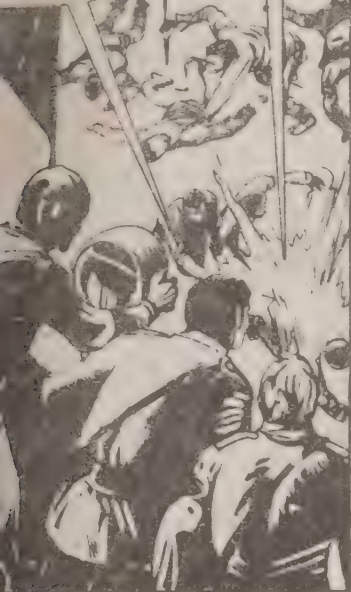
सब बेकार है. दूसरे उपग्रह से बन्दरों का एक और अंतरिक्षयान आ गया है.

और उन्होंने हमारे सभी फौजी अड्डों पर कब्जा कर लिया है।रेडियो ने अभी-अभी इसकी सूचना दी है.

धरती पर रहने वालो, तुम्हारी कहानी समाप्त हुई. अब इस धरती पर हमारा अधिकार है.

तुम ने हमें जो हानि पहुंचाई है. हमारे वैज्ञानिक मारे हैं और हमारा अंतरिक्ष यान नष्ट किया है, इसके बदले में हम तुम्हारी एक-एक प्रयोगशाला को बमों से उड़ा देंगे. तुम्हारे फौजी ठिकानों को मलवे का ढेर बना देंगे.

क्ष में उड़ने की बात छोड़ो, हम तुम्हारी वह हालत बना
गे कि तुम सड़कों पर भी केवल पैदल ही चलने के
काबिल रह जाओगे.

क्या उल्लुओं की तरह सोच रहे हो. अरे किसी तरह जान बचा कर भागो यहां से.
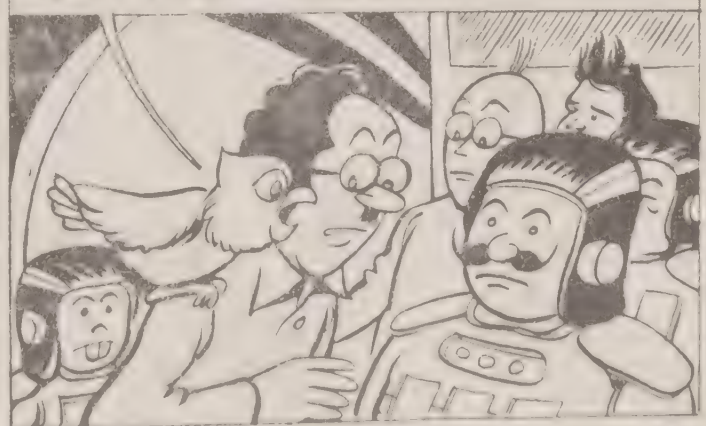
यहां तो प्रलय आने वाली है. दूसरे उपग्रह से आये बन्दर अब सब कुछ तहस-नहस करके पत्थर और धातु के जमाने वाली हालत बना देंगे इस दुनियां की

इस मूछों वाले करेले ने हमें यहां ला कर फंसाया है, फिल्म की शूटिंग दिखाने के बहाने और अब खुद भी ऐसे भाग रहा है, जैसे हेमामालनी डांस कर रही हो.
टाईम मर्शान की ओर चलो, और याद करो कहां छोड़ी थी.

अपने यह कपड़े उठाते चलो जो हमने मरे हुये फौजियों से बदले थे.
क्या कहा, पापड़ उठाले जो तुमने तले हुये थे? यहां तो कहीं कोई पापड़ नहीं है,
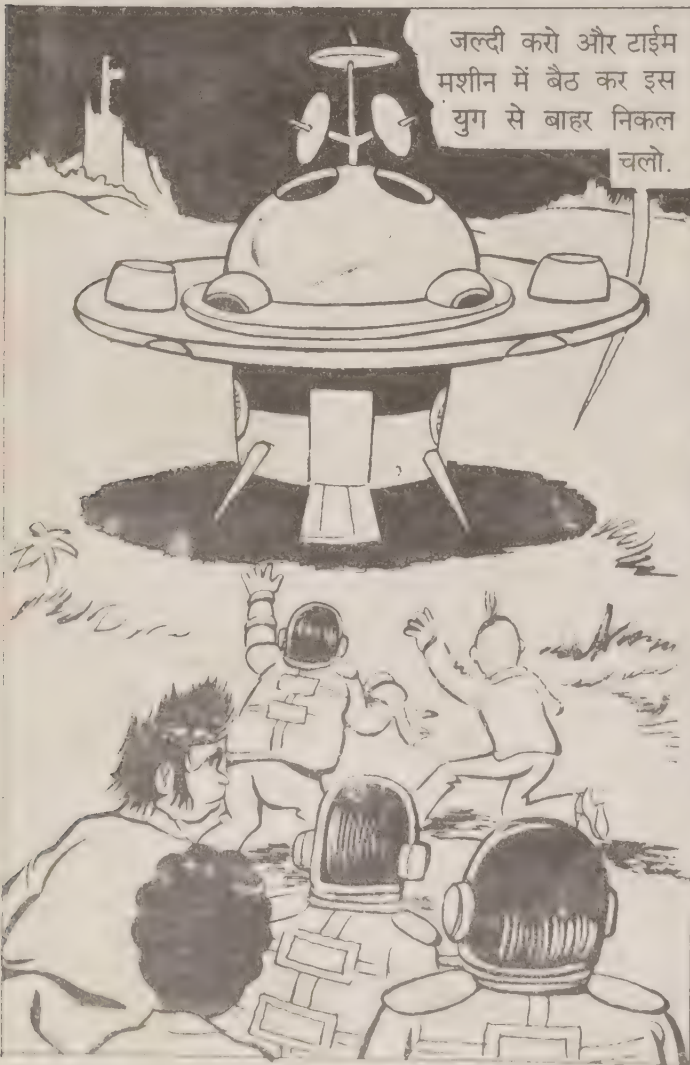
जल्दी करो और टाईम मशीन में बैठ कर इस युग से बाहर निकल चलो.

उनके अंदर पहुचते ही आटोमैटिक दरवाजा फिर बन्द होगय
जल्दी से मशीन का कंट्रोल सम्भालो और इसे स्टार्ट करके यहां से निकल चलो.
बूबलाबू पता नहीं इस
कहां होगा. मैने मशीन
करके समय के धारे
यात्रा शुरू कर दी
वह यहीं इसी युग
रह
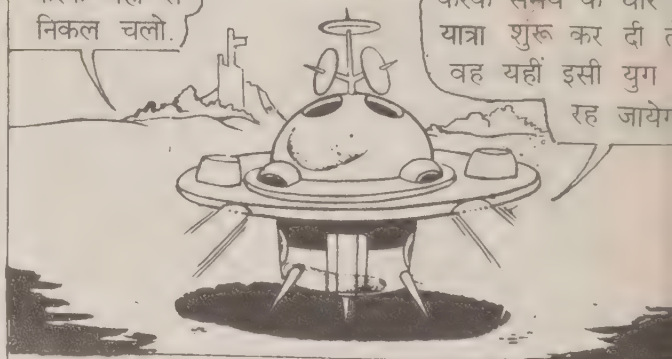
उसकी चिंता छोड़ो. बन्दर अब तक उसकी आलू की टिक्की बना कर खा गये होंगे.
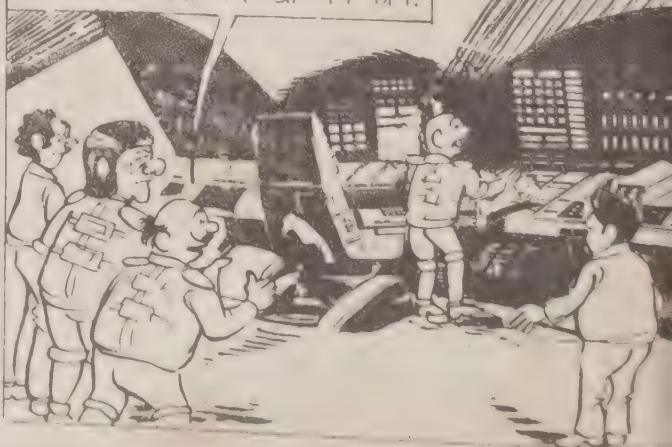
लाराम टाईम मशीन
के तमाम कंट्रोल सीख
चुका था.
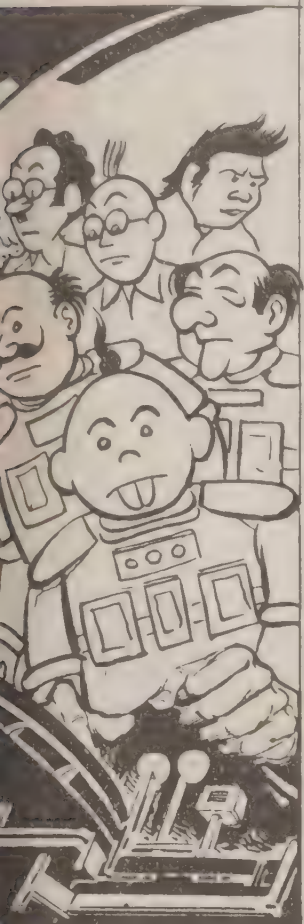
उसने जैसे ही मशीन स्टार्ट की

टाईम मशीन ने अपनी जगह से उठ कर समय के धारे में अपना सफर शुरू कर दिया.
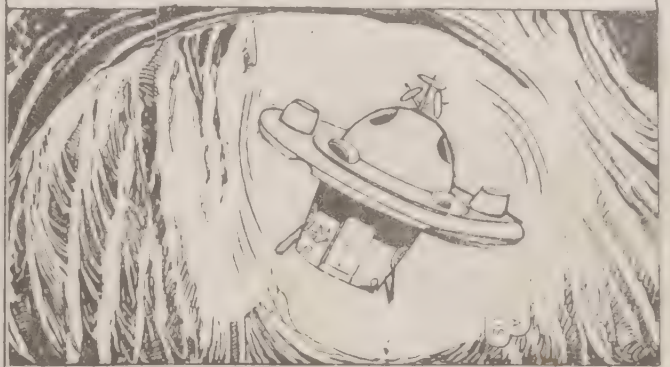
अब फिर एक बार धरती लट्टू की सी तेजी से सूरज की परिक्रमा कर रही थी. दिन-रात जुगनू की चमक की तरह तेजी से बदल रहे थे.
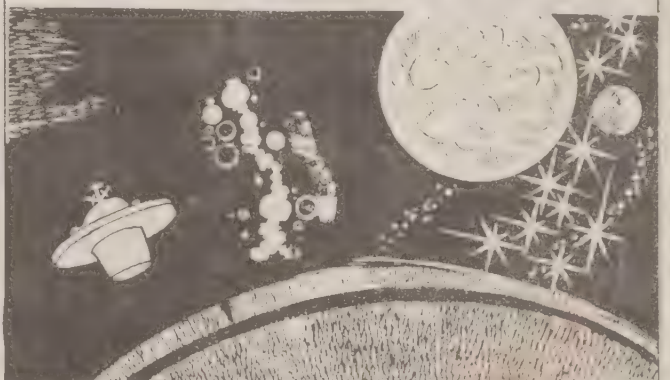
महीने, साल और सदियां ताश के पत्तों की तरह पलट-पलट कर बदल रही थीं.
तनी देर में उन्होंने अपने कपड़े बदल लिये
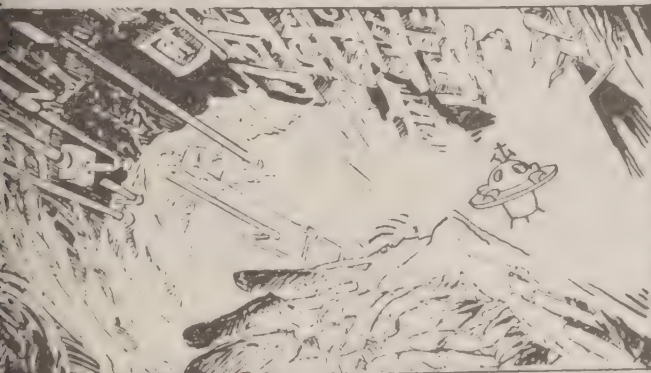
चेलाराम ने तुरंत बटन दबा कर मशीन रोक दी जैसे ही टाइम मशीन ने अपना सफर समाप्त किया और वह नीचे बैठ कर एक जगह टिक गई
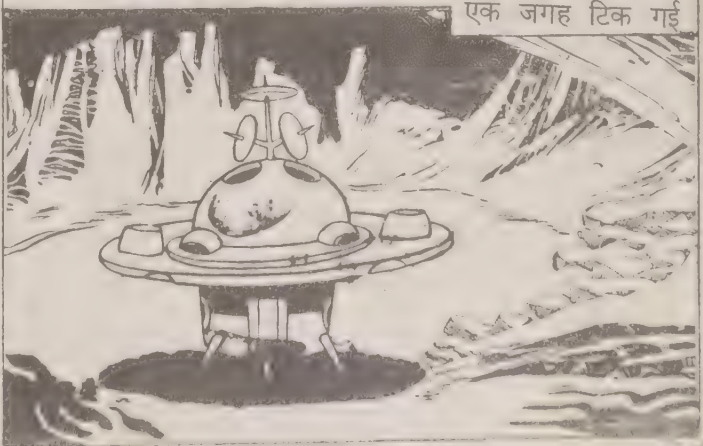
चालू हो हो नहीं रही है, किसी तरह भी। लगता है मशीन का सिस्टम कुछ ऐसा है कि एक बार कोई सफर पूरा करने के इसे कुछ रेस्ट चाहिए.

पता नहीं इसे कितना रेस्ट चाहि

यह भी एक कैदखाना ही है. यहां पड़े-पड़े सड़ कर जायेंगे हम.

तो फिर चलो, बाहर निकल कर देखो, यह मशीन हमें कहां ले आई है?
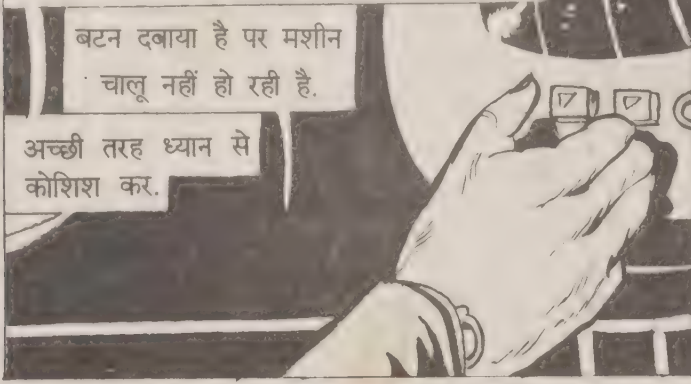
मशीन का मीटर क्या बता रहा है? अपने १९८२ से आगे अब कौन से सन में पहुंच गये हैं हम?

इस समय सन है, ३०२९८२. अपने युग से ३०१००० साल आगे.

302982
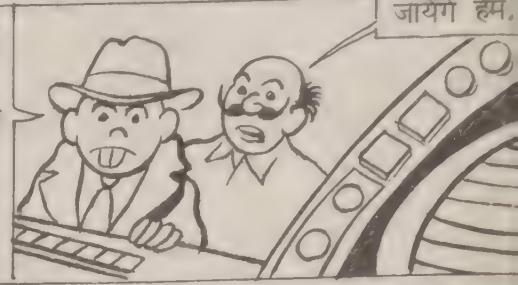
बाहर निकल कर देखा तो उस युग की धरती कुछ और ही थ

इस विचित्र कहानी का अगला भाग देखिये आगामी अंक में

नम्बर का चक्कर

गोपाल प्रसाद

[ह]मारे बगल वाले मकान में ही गिरधारी चाचा [र]हते थे। पूरे मुहल्ले में वे बहुत प्रसिद्ध थे। [इ]स बीच चाचा जी कुछ अस्वस्थ रह रहे थे [इ]सी कारण मुहल्ले में कम दिखायी पड़ते थे।

उस दिन मैं अपनी मौसी के यहां जाने के [लि]ये तैयार हो रहा था कि आचानक कॉलबैल [गु]नगुना उठी। मैं झल्लाते हुए दौड़ा। सामने [चा]चा जी के बड़े लड़के गणपत को घबराया [हु]आ देख, मैं चौंका—''अरे, तू इतना घबराया [हु]आ क्यों है?'' मैं किसी अनिष्ट की आशंका [से] सिहर उठा था।

''भाई साहब, जल्दी चलिये मेरे साथ, मेरे [बा]बू जी को कई बार ब्लीडिंग हो चुकी है और [अ]ब अवस्था और भी नाजुक होती जा रही [है]।'' वह एक ही सांस में सारी बातें कह गया। [य]ह सुनते ही मेरी भृकुटियां तन गईं। हालांकि [ब]हुत ही जरूरी कार्य से मौसी के यहां जाना [था] फिर भी उस प्रोग्राम को रद्द कर, फौरन [उ]स के साथ चल पड़ा।

वहां चाचा जी की अवस्था देखते ही मैं [तु]रन्त बाहर आया और मोड़ से एक टैक्सी [प]कड़ लाया। मरीज को जैसे-तैसे अन्दर [उ]ठाया और एक निकट हास्पीटल के इमरजैं[न्सी] वार्ड में ले पहुंचा। मेरे साथ सहयोगी के [रू]प में केवल गणपत ही था। वह काफी [घ]बराया हुआ था। जल्दी से डाक्टरों को खबर [भि]जवायी गयी। चाचाजी के चैक-अप के बाद [उ]न्होंने तत्काल भर्ती कर लिया एवं हम लोगों [को] सख्त चेतावनी दी कि रोगी को किसी [स]मय भी खून की आवश्यकता पड़ सकती [है] इसलिये बेहतर होगा कोई भी आदमी हर [व]क्त यहां मौजूद रहे।

खैर, मैं गणपत के साथ हास्पीटल में रह [ग]या। रह-रह कर इधर-उधर टहलने लगा। [चा]रों ओर से दवाइओं की भीनी-भीनी महक [भी] आ रही थी। विचित्र वातावरण था। कोई [रो] रहा था तो कोई अपने मरीज को स्वस्थ ले [जा]ते समय, खुश था। देखते-देखते रात के [ग्या]रह बजने को आए। इधर पेट में चूहे भी [कू]द रहे थे। मैंने उसे समझाया ''दोस्त, अब [मु]झे इजाजत दे क्योंकि घर पर मेरा भी इन्तजार [हो]ता होगा और फिर अगर कोई आवश्यकता [प]ड़ी तो चिन्ता किस बात की, बगल में ही तो [घ]र है, खबर भिजवा देना। किसी तरह समझा [बु]झाकर घर चल पड़ा। रास्ते में उसके घर भी [ख]बर देता गया।

इधर मैं खा पीकर लम्बा हो गया। सुबह [उ]ठा तो चौंक पड़ा। बगल वाले मकान से रोने चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। किसी अनिष्ट के विचार से कांप उठा। दौड़कर वहां पहुंचा। सामने ही गणपत को रोनी सूरत बनाये खड़ा पाया। घर में सभी आसुओं से तर—बतर थे, अगल-बगल से आये पड़ौसी इन लोगों को सांत्वना दे रहे थे। मैं मामला समझ गया पर अब किया भी क्या जा सकता था? मैं भी उसे सांत्वना देने लगा।

मुझे गणपत छोड़ना ही नहीं चाह रहा था, लाचारवश उसके साथ, क्रिया कर्म आदि वस्तुओं हेतु, बाजार भी जाना पड़ा। किसी तरह सभी समान लेकर वापस आया। सभी व्यवस्था पूर्ण करने के बाद वहां से हास्पीटल चल पड़ा।

अभी हम लोग अन्दर घुसने ही वाले थे कि एक पड़ोसी दौड़ता हुआ हमारे पास आया। वह हाफंता हुआ बोला,'' ''भैया, यह कैसा करिश्मा है?''

''कैसा करिश्मा, भाई'' मैंने चौंकते हुए पूछा।

—''अरे भईया, ऊपर वार्ड से आ रहा हूं और चाचा जी जीवित बैठे हुए हैं।''

''क्या बकता है? क्या तूने अपनी आंखों से ....।''

''विश्वास नहीं तो चलिये मेरे साथ और वह मुझे ऊपर वार्ड में ले गया। उस समय 'वीजिट टाइम'' था, इसलिए कुछ चहल-पहल सी थी। तभी मेरी नजर एक पलंग पर पड़ी। मैं चौंक उठा, सचमुच चाचा जी बैठे हुए थे। मैं खुशी से मुस्करा उठा और तत्काल नीचे आया। गणपत को यह खुश-खबरी सुनाई तो वह भी असमंजस में आ फंसा। ''क्यों मजाक कर रहा है?'' उसने अपनी रोनी सूरत बनाते हुए कहा।

''देख, मैं मजाक नहीं कर रहा हूं। अच्छा, यह बता, क्या तू रात भर यहां रहा?'' मेरे प्रश्न के जबाब देने के पहले ही उसने अपने छोटे भाई मुरारी को बुलाया, '' क्या तूने अपनी आंखों से पिता जी को मृत देखा था?'' यह पूछते ही वह भी हकला उठा,'' मैं ...मैं ...कैसे देखता, वार्ड में घुसने दें तब न, मैं तो सुबह एक स्वीपर को चव्वनी दिया और बैड नं. पैतीस के बारे में खबर लाने भेजा ...।''

''और उसके द्वारा तुझे यह दुःसम्बाद प्राप्त हुआ।'' मैने उसके जवाब को पूर्ण किया,'' अबे ....तेरे बाबू जी जिन्दा हैं और बैड नं. पैंतीस नहीं, चालीस पर हैं।''—'हां भाई, भर्ती के समय पैंतीस पर ही थे, बाद में किसी पर ट्रान्सफर कर दिया गया और यह नया मरीज सुबह में मृत पाया गया।''

गणपत खुशी से पागल हो उठा। हमलोग सभी ऊपर गये। सभी बैड नं. चालीस को देख मुस्कराने लगे। गिरधारी चाचा मजे में बैठे हुए हम लोगों को देख रहे थे।

'ये भी सत्य है''

दुनिया में बहुत से सरोवर हैं, परन्तु दुनिया का सबसे बड़ा सरोवर बैकल सरोवर है। जो रूस के सैनीरिया में स्थित है, इसकी गहराई ५६५० फीट है।

सन १७९३ में फ्रांस में एक लड़की पैदा हुई थी। उसके दो आखों के बजाये माथे पर केवल एक ही आंख थी, १५ वर्ष तक जिन्दा रही।

सन् १८७० में प्रकृति ने एक रिकार्ड स्थापित किया था कि इस सन् में भारत के श्रीरंग पट्नम में 'हाथी' जितने बड़े 'ओले' गिरे थे, जो आज तक विश्व रिकार्ड है।

संसार का सबसे पहला शब्दकोश १२२५ में लैटिन भाषा में बना था।

१८३९ में इंगलैड में एक आदमी जिसका नाम चार्ल्स बर्थ था। वह चार वर्ष का होते ही मूछों व दाड़ी का मालिक बन गया था तथा सात साल की आयु में ७० साल के बूढ़े के समान हो गया और तभी उसकी मृत्यु हो गई।

डैनियल बेबस्टर ने होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति का आविष्कार किया था

मोजम्बीक के निवासी गेबरेल मोन्जान नामक व्यक्ति की लम्बाई ८ फुट ६ इंच है। वह विश्व का सब से लम्बा व्यक्ति है।

—विक्रम भूटानी

गणतंत्र दिवस परेड में कुछ ऐसी
झलकियां भी देखने को मिलने चाहियें
पंजाब
आप पंजाब की झांकी नहीं देख पायेंगे क्योंकि पंजाब की झांकी वाला ट्रेलर हाइजैक करके लुधियाने ले जाया गया है।
हमने अपने राज्य की जो झांकी तैयार की थी उस का डी. एम. के. के कार्यकर्त्ताओं ने तोड़ फोड़ कर यह हाल कर दिया है।
तमिल नाडू
पश्चिमबंगाल दिल्ली की केन्द्र सरकार से हमारी बिल्कुल नहीं बनती, अतः हम अपनी झांकी में अंगूठा दिखा रहे हैं।
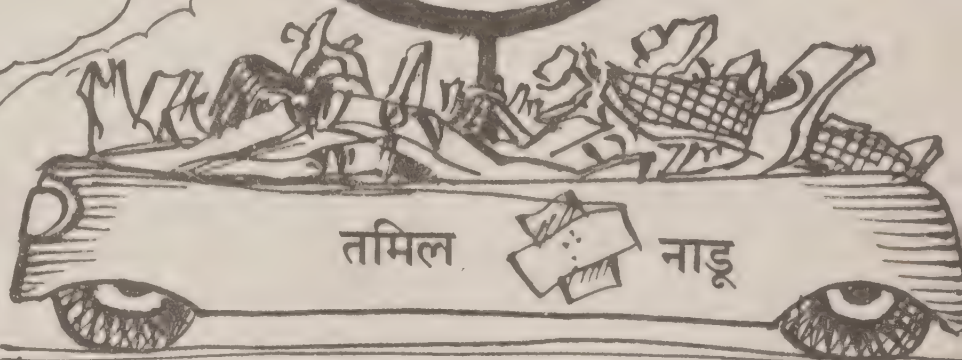
देखिये
आसाम
हमको आसाम की पाकेट साईज झांकी बनानी पड़ी ताकि हम इसे आसाम आन्दोलनकारियों की नजर से बचा कर दिल्ली ला सकें
दिल्ली
दिल्ली की झांकी वाले वाहन को गलत पार्किंग के लिये ट्रैफिक पुलिस उठा कर ले गयी है अतः झांकी के स्थान पर किरण बेदी का चित्र देखिये।
NO PARKING
यू.पी. बिहार (संयुक्त झांकी)
घड़े में दोनों राज्यों में मारे गये हरिजनों के अस्थिफूल हैं। यह झांकी यहा से सीधे हरिद्वार ले जायी जायेगी।
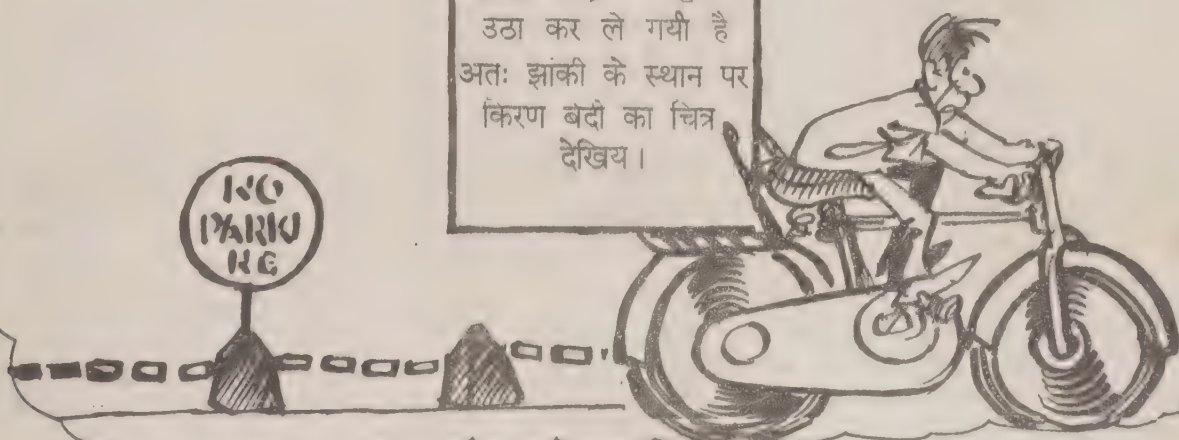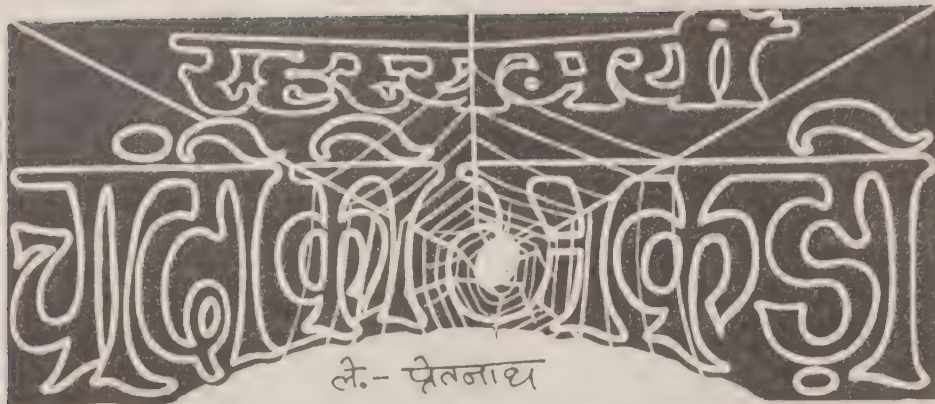
भाग-१४

हमारा लक्ष्य नष्ट हो गया, इसका मुझे अत्यन्त खेद है। परन्तु शायद फिर कभी कोई ऐसा दिन आये जब हम इस दिशा में कुछ कर पायें।देखो बाहर दिन निकल आया है, एक घंटे के भीतर ही रेडियो और टेलीविजन पर प्रधानमंत्री का संदेश प्रसारित हो जायेगा। आशा है तब तक तुम दूतावास में सुरक्षित पहुंच जाओगे।

''इसलिये अब मेरे पीछे-पीछे आओ, आगे हम पैदल ही चलेंगे, किश्ती हम सब को नहीं ले जा पायेगी। यह कह कर सब उसके पीछे कम्बल का रस्सा पकड़े पानी में उतर गये। भारी हृदय लिये धीरे-धीरे सब डैन्जो के बरसाती नालों के पानी में आगे बढ़ने लगे।

राजू के अन्तर्मन की आवाज—उनके ऊपर शहर में वर्षा रुक चुकी थी और नालों में पानी भी कम होना शुरू हो गया था। कुछ ही देर में पानी उतर कर टखनों तक ही रह गया और यह लोग आसानी से आगे बढ़ने लगे। वे और कई कमरेनुमा स्थानों से गुजरे जहां बहुत से बरसाती नाले एक दूसरे से मिलते थे परन्तु दोमित्र को अपना रास्ता भली भांति मालूम था। दोमित्र ने एक बार पीछे को मुंह कर बताया कि यह लोग दूतावास के निकट के ब्लाक में ही बाहर निकलेंगे। ''ईश्वर से प्रार्थना करो वहां कोई सिपाही पहरे पर न हो।''

वह एक बहुत ही लम्बे प्रतीत होने वाले समय तक आगे बढ़ते रहे, हालांकि नालों के ग्रुप अंधेरे में समय का आभास कठिन ही था। आठ दस ब्लाक तो यह लोग पक्का ही चले होंगे फिर एक और चेम्बर में आये जिसके ऊपर मैनहोल दिखाई दे रहा था, और यहां दोमित्र अचानक रुक गया। ''क्या बात है?'' रुडी ने पूछा अभी तो हमें दो ब्लाक और आगे जाना है।'' मेरे मन में ऐसा विचार आ रहा है कि जिस स्थान को हम जा रहे हैं, वहां पहरा अवश्य ही होगा'', दोमित्र बोला'' वे सोच रहे होंगे कि हम उसी स्थान से बाहर निकलेंगे और वे हमें बिल से निकलते चूहों के समान दबोच लेंगे। यदि मेरा अंदाज ठीक है तो इस समय हम फूलों के बाजार के नीचे हैं, जो सेंन्ट डोमिनिक के गिरजे के पिछवाड़े में है। वे लोग हमें यहां नहीं देख रहे होंगे, यहां से हम दूतावास के पिछवाड़े से खिसक कर भीतर पहुंच सकते हैं।

''मेरे ख्याल में तुम ठीक ही कह रहे हो,'' रुडी ने सहमत हो कर कहा। अच्छा सारा जीवन तो हम यहां नीचे छिपे नहीं रह सकते। चलो ऊपर बाहर निकलें। लोहे की सीढ़ी के ढक्कन पर कंधा लगा कर जोर लगाया। लोहे का ढक्कन उठ कर ऊपर सड़क पर जोर से लुढ़क गया।

दोमित्र तुरन्त बाहर निकला।

''जल्दी-जल्दी ऊपर आओ, मैं तुम्हें अपने हाथ का सहारा दूंगा,'' वह बोला।

दोमित्र के मजबूत हाथ के सहारे से ऐलना बाहर निकली और फिर श्याम ऊपर आया, अंधेरे से एक दम उजाले में आने के कारण, श्याम आंखें मिचकाने लगा। आकाश में बादल छाये हुए थे, रात की बर्षा के कारण सड़कें धुल कर चमक उठी थीं। यह लोग एक सकरी सी गली में थे जिसके दोनों ओर पुराने ऊंचे घर बने हुए थे। गली में बहुत सी छोटी-छोटी दुकानें लगी थीं जिनमें रंग-बिरंगे कपड़े पहने लोग व्यापार के लिये अपनी दुकानें सुन्दर रंग बिरंगे फूलों तथा फलों से सजा रहे थे। भीगे-भागे लड़कों के झुंड के मैनहोल से बाहर निकलने पर वे सब हैरानी से इन्हें देखने लगे।

रुडी और दोमित्र ने मिल कर मैनहोल का ढक्कन फिर से यथा स्थान लगा दिया फिर तुरन्त ही आस-पास के लोगों की अचम्भित नज़रों की परवाह किये बिना दोमित्र गली में आगे बढ़ने लगा, ये लोग लगभग पचास गज ही चले होंगे कि दोमित्र अचानक रुक गया।' इनके आगे महल के दो सिपाही लालवर्दी पहने कोने के पास से मुड़े।

''पीछे हो जाओ, छुप जाओ।'' दोमित्र चिल्लाया। परन्तु इन्हें देर हो गई थी' इन्हें देख लिया गया था। इनके गीले कपड़ों से साफ पता चल रहा था यह लोग कौन हैं। सिपाहियों ने जोर से आवाज लगाई और इन भगोड़ों की ओर भागना आरम्भ कर दिया।

''आत्मसम्पर्ण'' कर दो वह बोले ''रीजेंन्ट के आदेश के अनुसार तुम हिरासत में हो।''

''हां! परन्तु पहले तुम्हें हमें पकड़ना पड़ेगा,'' दोमित्र ढिठाई से बोला, उसने घूम कर अपने हाथ से इशारा किया, मेरा पीछा करो! हम चर्च में घुस जायेंगे, वहां कुछ आशा है।''

कुछ और सुनाई नहीं दे पाया, वे लोग पहले ही उसके पीछे हो लिये थे, राह में आते हुए लोगों से बचते बचाते, लगभग एक दर्जन सिपाही इनका पीछा कर रहे थे, परन्तु उन्हें अचम्भित फूल बेचने वालों के सड़क के बीच इकट्ठे झुंड के कारण काफी कठिनाई हो रही थी। 'रास्ते से हट जाओ!'' सिपाही चिल्लाये।

घरों की छतों के ऊपर श्याम को सेन्ट डोमिनिक चर्च का सुनहरा गुम्बद दिखाई दे रहा था वह थक कर हांफने लगा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि हमारे चर्च में छुपने से आखिर क्या फायदा होगा? केवल पकड़े जाने का समय ही थोड़ा बढ़ जायेगा। परन्तु दोमित्र के दिमाग में ऐसा लगता था कुछ-ना-कुछ प्लेन अवश्य था, और प्रश्न पूछने का यह समय नहीं था।

उनका पीछा करते सिपाहियों में से एक फिसल कर गिर गया और उसके पीछे आते उसके साथी एक-एक कर उसके ऊपर गिरते गये। सड़क पर सिपाहियों का ढेर सा लग गया, इससे भागने वालों को लगभग पचास गज का फासला और मिल गया। श्याम सोच रहा था कि गिरने वाला सिपाही हो सकता है मित्र होने के कारण जानबूझ कर अचानक सड़क पर गिर पड़ा हो ताकि वह इनकी थोड़ी बहुत जितनी भी हो सके सहायता कर दे।

वह एक कोने से मुड़े और बस उनके सामने एक ब्लाक की दूरी पर शानदार चर्च दिखाई दिया। और वहीं वहां से एक ब्लाक की दूरी पर महल के कुछ और सिपाही इनकी ही तालाश में खड़े दिखाई दिये।

लगता नहीं था कि यह लोग किसी प्रकार भी गिरजे के द्वार के भीतर घुस पायेंगे।

परन्तु दोमित्र मुख्यद्वार की ओर बढ़ता दिखाई नहीं दे रहा था, वह एक दम से मुड़ कर चर्च के सामने की सड़क के दूसरी ओर बने छोड़े साइड के द्वार की ओर बढ़ रहा था और वे भाग कर भीतर घुस गये और अन्दर से दरवाजे में कुंडा लगा लिया और उनका पीछा करने वाले सिपाही दरवाजे को हाथों से जोर-जोर से पीटने लगे।

चर्च में भागते भागते श्याम को चर्च में केवल एक बड़े से बिना छत के चोकोर

शेष पृष्ठ २४ पर

सवाल यह है? जो लाजवाब है!

लल्ला की लवस्टोरी

दिल्ली वालों के लिये विशेष
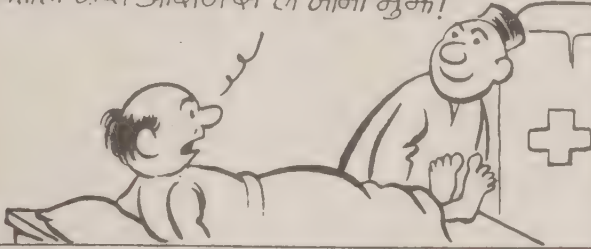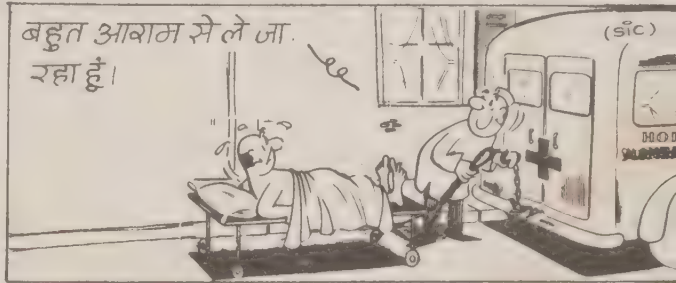
गणतंत्र व्यायाम

...हां, गणतन्त्र दिवस आया और २६ जनवरी की परेड का ...ल आंखों के सामने उभरा। परेड देखने दिल्ली आये बाहर ... व्यक्ति दिल्ली वालों के लिये खास समस्यायें खड़ी करते ... विशेष कर जब वह मेहमानों के रुप में आते हैं। इन समस्याओं से निबटने के लिये हमने कुछ विशेष व्यायामों का विकास किया है जिन्हें गणतन्त्र दिवस से १५ दिन पूर्व से नियमित रुप से कर दिल्ली वासी अपनी मुश्किलें काफी हल्की कर सकते हैं।
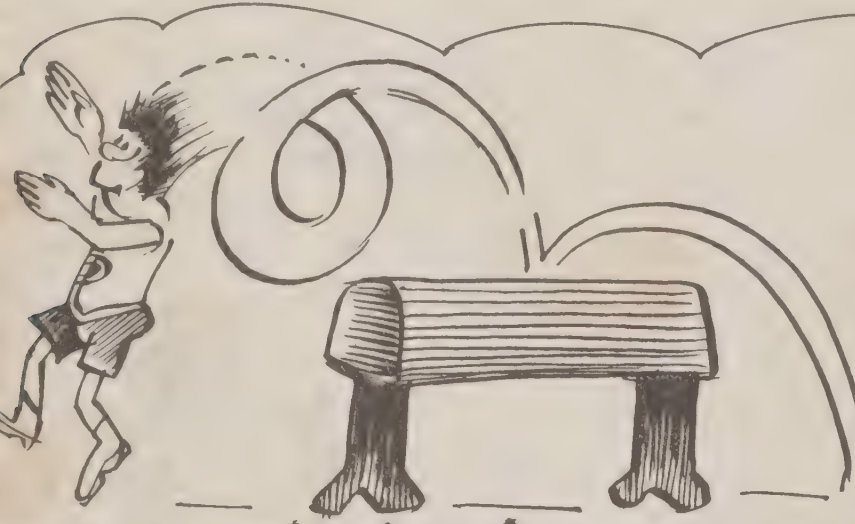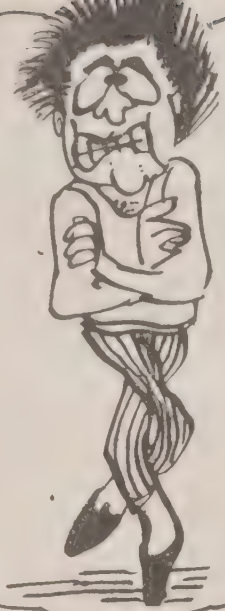
व्यायाम—दोनों आंखों को बीच में लाइये। टांगों में कैंची डालिये और धड को मरोडने और ऐंठाने की कोशिश करें।

लाभ—आपको तेज हाजत हो रही हो और बाथरूम पर मेहमानों का कब्जा हो गया हो तो आपको ऐसा ही करना पड़ेगा।आदत पड़ी हो तो बुरा नहीं लगेगा।

व्यायाम—घर की गृहस्थी चित्र में दिखाई मुद्रा में हाथ व घुटनों के बल बैठे। फिर बारी २ से एक हाथ नीचे टिकाये रखें दूसरा ऊपर ले जायें। निरन्तर यह अभ्यास करें।

लाभ—जब २० मेहमानों के लिये आटा गूंधना पड़ेगा तो लाभ का खुद पता लग जायेगा।

व्यायाम—आंखें मींच कर मुंह बन्द कर, हाथ मोड़ मुट्ठियां भींच कर सांस रोकने की प्रैक्टिस करें।

लाभ—जब मेहमान आपके कपड़े पहन गन्दा करेंगे और उनमें बीड़ी सिगरेटों से छेद निकालेंगे तो आपको अपना गुस्सा उबलने से रोकने के लिये यही मुद्रा अपनानी पड़ेगी

व्यायाम—घर के मुखिया सीधे पीठ के बल लेट कर ऐड़ी और सिर की सहायता से शरीर को कमान बना कर ऊपर उठायें। पीठ व टांगों का अधिकतर भाग जमीन से ऊपर उठा रहे।

लाभ—मेहमान अधिक आने पर बिस्तरों पर उनका कब्जा हो जायेगा और आपको फर्श पर सोना पड़ेगा। दिल्ली की सर्दियों में फर्श बर्फ बन जाता है। उपरोक्त अभ्यास द्वारा शरीर के अधिकतर भाग को फर्श की सर्दी से बचाया जा सकता है।
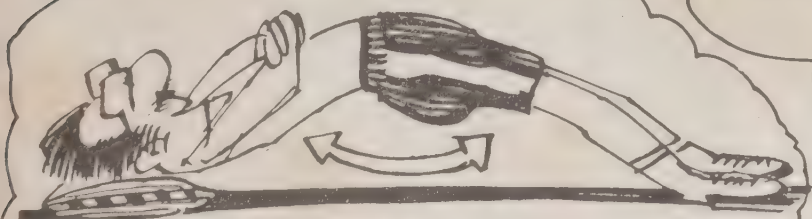
व्यायाम—घर के छोटे बच्चे हाथों को सीधे सामने ले जाकर अर्धवृत रूप से घुमायें—हाथ जोड़ने का अभ्यास भी करें।

लाभ—परेड देखने आये मेहमानों को हाथ जोड नमस्ते करने में थकान कम महसूस होगी

पृष्ठ २० से आगे

कमरे को ही देखने का ध्यान था। और यह ऊपर-ऊपर और ऊपर को ही जा रहा था जहां तक भी दिखाई दे रहा था। इस के एक ओर सीढ़ियां थीं जो कि लोहे के एक बड़े दरवाजे से बन्द थीं। आठ बड़े ही मोटे रस्से ऊपर से लटक रहे थे, इनके सिरे दीवार में गढ़े लोहे के मजबूत छल्लों में बन्धे थे। श्याम इससे अधिक कुछ और नहीं देख पाया। "अब हम कैटाकोम्ब की ओर जायेंगे," दो मित्र कह रहा था क्या तुम लड़कों को मालूम है कैटाकोम्ब क्या होते हैं? ये चर्च के नीचे छिपे दफनाने के स्थान हैं। प्राचीन काल में लोगों को यहां दफनाया जाता था और इनकी कई मंजिलें हैं तथा इनमें कई गलियारे हैं, हम यहां छुप सकते हैं—

"अब और अधिक छुपने का क्या लाभ है," राजू अचानक ही बोला। वे लोग हमें जल्दी या देर में पकड़ तो लेंगे ही।

सब हताश से राजू की ओर देखने लगे। "तुम कुछ सोच रहे हो राजू, मुझे विश्वास है मेरा विचार ठीक है, क्या सोच रहे हो राजू बताओ ना?" महिन्दर बोला ...ू ने लटकते रस्सों की ओर इशारा करके पूछा "क्या इन्हीं रस्सों से प्रिंस पाल की घंटी बजती है?"

"प्रिंस पांल की घंटी," रुडी ने राजू की बात की ओर ध्यान देते हुए उत्तर दिया। "नहीं!" इससे तो गिरजे की साधारण घंटियाँ ही बजती हैं, प्रिंस पांल का घंटा तो दूसरे घंटे की मीनार में है। उसे तो केवल विशेष राज्य उत्सव इत्यादि पर ही बजाया जाता है।"

"हां! राजू जल्दी से बोला, परन्तु जोरो ने हमें बताया था कि सैकड़ों वर्ष पूर्व जब देश में विद्रोह हुआ था तब प्रिंस पॉल ने अपने साथियों को घंटा बजा कर ही एकत्रित किया था और उन्हें बताया था कि वे जीवित हैं। सब राजू को हैरानी से देखने लगे, दोमित्र अपनी ठोड़ी खुजलाने लगा।

"हाँ"। वह बोला "हमारा देश का बच्चा-बच्चा इस कथा से परिचित है. यह हमारे देश का प्राचीन इतिहास है: परन्तु तुम्हारा इससे क्या तात्पर्य है?"

"इसका मतलब है कि यदि हम किसी प्रकार, इस समय प्रिंस पाल के घंटे को बजायें तो, जनता को जोरो के जीवन के खतरे का आभास हो जायेगा और वे स्वयं ही प्रिंस जोरो की सहायतार्थ उठ खड़ी होगी।" रुडी बोला। "हमने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया, हम लोगों के लिये तो यह कथा, इतिहास की एक प्रचानी कहानी भर है, जो बहुत पहले घटी थी। हमें तो केवल समाचार पत्र, टेलीविजन और रेडियो का ही ध्यान आता रहा, परन्तु सोचो यदि आज—घंटा बजने लगे ऐलना उसके साथ उत्सुक हो कर बोल पड़ी, और उन सब रेडियो के महत्वपूर्ण संदेश संबंधी प्रसारणों के बावजूद, तरानिया की जनता प्रिंस जोरो को जी जान से चाहती है। यदि उन्हें किसी प्रकार यह मालूम हो जाये प्रिंस जोरो विपत्ति में है और जनता की सहायता चाहते हैं, तो जनता अवश्य सहायता के लिये तुरन्त आगे बढ़ेगी।

"परन्तु यदि! दोमित्र ने कहना चाहा!

"परन्तु यदि वही के लिये हमारे पास समय नहीं है, हमारे पास तो कुछ क्षण ही हैं, सुनो सिपाही दरवाजे को पीट-पीट कर तोड़े डाल रहे हैं," रुडी बोला।

"अच्छा ठीक है," दोमित्र बिना हिचके तुरन्त बोला अब तक तो सिपाही मुख द्वार की ओर से भी गिरजे के भीतर आने वाले होंगे। "रुडी तुम इन्हें ले कर घंटे की ओर जाओ, मैं और ऐलीना कैटाकोम्ब की ओर जायेंगे, यदि सिपाही हमारे पीछे आ गये तो तुम्हें कुछ और बहुमूल्य समय मिल जायेगा। ऐलीना हमारा कोई चिन्ह उन्हें यहां मिलना चाहिए मुझे अपना एक जूता उतार कर दे दो।"

ऐलीना ने झुक कर शीघ्र ही अपना भीगा हुआ एक जूता दो मित्र को दे दिया।

'मैं इसे सिन्डरैला के समान पीछे छोड़ जाऊंगी और कह कर मुस्करा दी। "जाओ रुडी जल्दी करो"। "इधर से मेरे पीछे आओ"। रुडी बोला और वह गिरजे के भीतर भाग कर घंटे की दूसरी मीनार की ओर चल दिया। श्याम, महिन्दर और राजू तुरन्त उसके पीछे हो लिये। दोमित्र और ऐलीना कैटाकोम्ब को जाने वाले एक पिछले द्वार की ओर भाग गये।

श्याम और लोगों से कुछ पीछे रह गया, वह अब कुछ लंगड़ा सा रहा था। उसके टांग पर एक बार बुरी तरह हड्डी टूट जाने के कारण सहारे के लिये ब्रेस लगा हुआ था जो इतनी अधिक भाग दौड़ करने के कारण बहुत अधिक दर्द करने लगा था। उसके आगे बढ़ते उसके साथी उसे पीछे देख कर कुछ क्षण उसके लिये रुक गये और लंगड़ाते-लंगड़ाते श्याम उन तक पहुंच गया और उसने अपने को एक और पहले जैसे कमरे में ही खड़े पाया। इस कमरे की भी कोई छत नहीं थी, यहां केवल एक ही मोटा और मजबूत रस्सा ऊपर से लटक रहा था जो दीवार पर बंधा था।

पहले जैसी ही लोहे के दरवाजे में बंद सीढ़ियां मीनार में ऊपर जा रही थीं। रुडी ने बड़ी ही फुर्ती से रस्से को खोल दिया और अब वह सीढ़ियों की ओर भागा।

"आओ! तेजी से ऊपर चढ़ो!" वह बोला।

महिन्दर ने सहारा देने के लिये श्याम की बांह थाम ली और सब पत्थर की सीढ़ियों से हड़बडाते हुए ऊपर चढ़ने लगे।

क्रमशः

सिलबिल पिलपिल

इतने सारे लैटर देखकर थम तो खुश हो गये थे कि लोगों ने थमारी जासूसी से खुश हो कर लैटर लिखे होंगे। यह थमारे गाम के रिश्तेदारों की चिट्ठियां हैं, सब बाल बच्चों-परिवार सहित २६ जनवरी देखने दिल्ली थमारे मेहमान बन कर आने वाले हैं। चाचा, रामजोत, काकी, चाची, फूफा, फूफी, नाना, ताया, मौसा, भरजाई, भौजी, मामा जी, चचेरे और फूफेरे भाई सब तशरीफ ला रहे हैं।
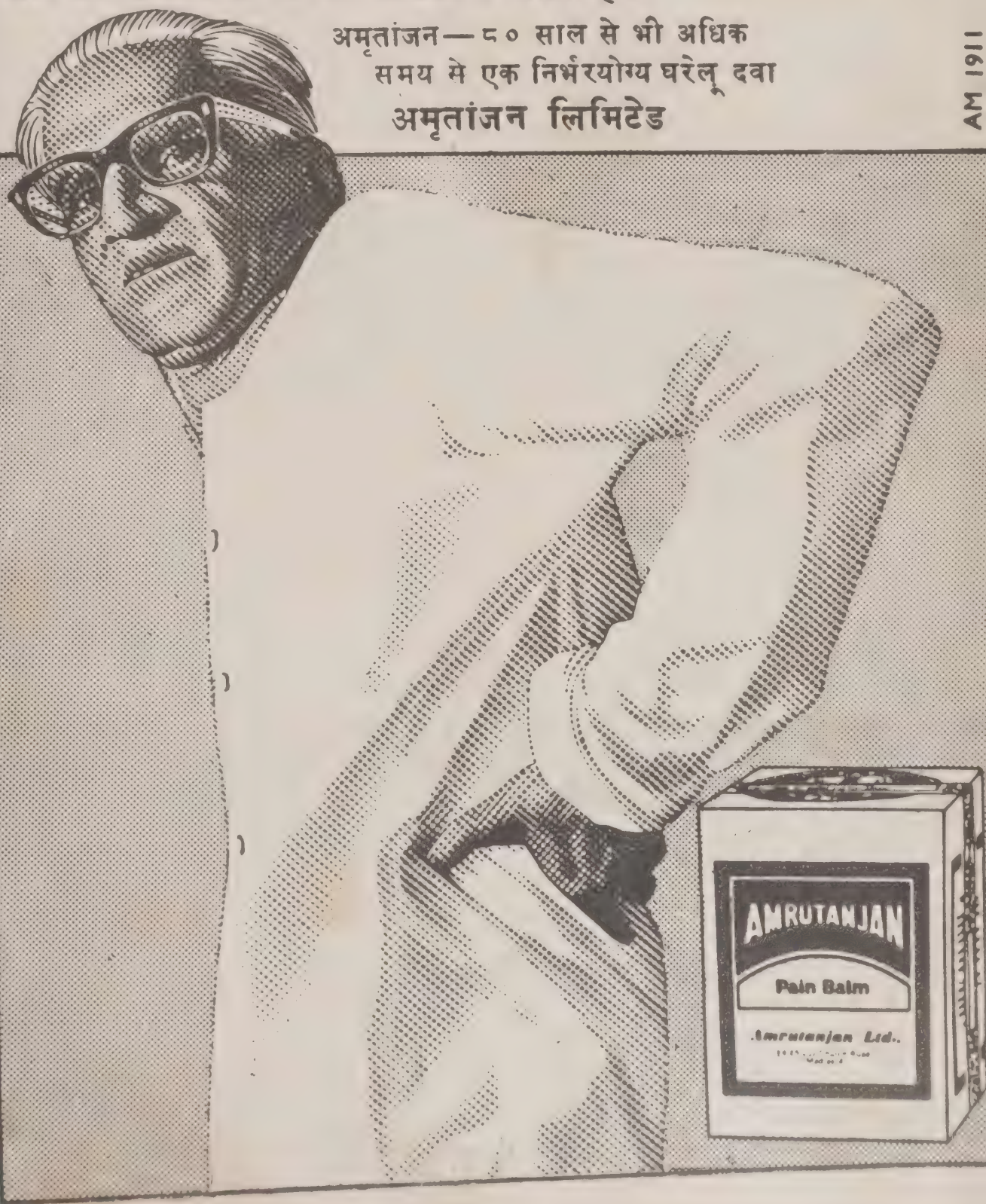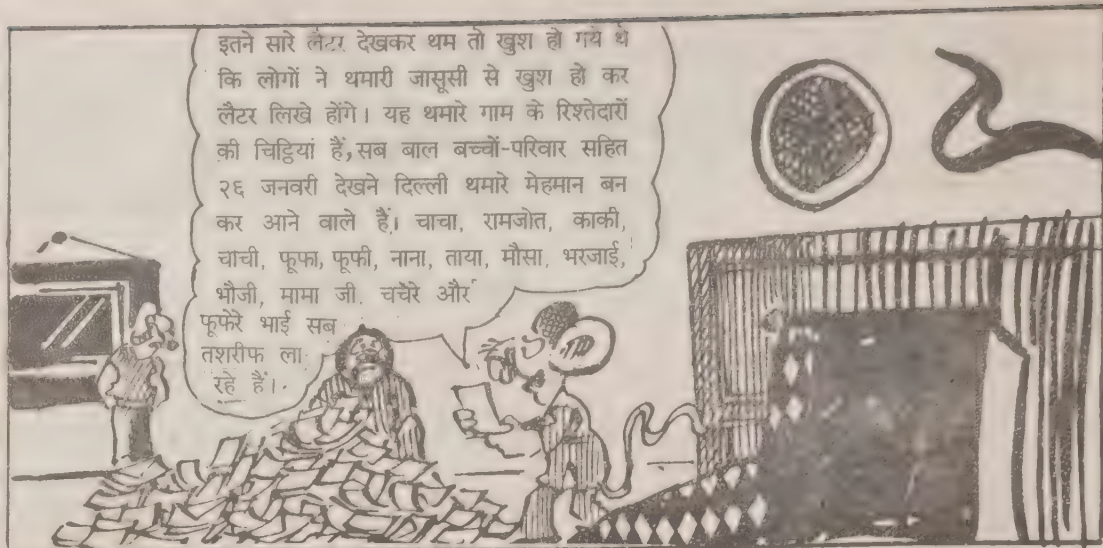
पैंतालीस मेहमानों को हम कहां बिठायेंगे और क्या खिलायेंगे ?
कनस्तरों और टोकरियों में अपने घर के चूहे भी ले आते हैं। खटमल और जुयें तो चिपकी चली आती ही हैं।
सोफों पर चौकड़ी मार कर बैठ जाते हैं।
पता नहीं इन हिन्दुस्तान के लोगों को कब अक्ल आयेगी। चल देते हैं मुंह उठा कर घर भर का सामान लाद कर।
अंग्रेजों के जाने का यही तो नुकसान हुआ वह रहते तो लोगों को क्यू में खड़े होना और बटर टोस्ट खाना सिखा देते।
बीड़ी और सिगरेट के टोटे कार्पेट पर मसल कर बुझाते है।

ताया जी ने लिखा है कि इन को शहर का डेरी का पाउडर दूध माफिक नहीं आता इसलिये वह अपनी गाय रज्जो भी साथ ला रहे हैं। उसको बांधने के लिये जगह और चारे का प्रबन्ध करके रखना। फूफी राम देई का लड़का पेट की बीमारी से ग्रस्त है। उसे केवल बकरी का दूध पचता है वह अपनी बकरी साथ लायेगी।
गाय-बकरी ! भैंस !
कोई-न-कोई मुर्गियों का दड़बा ही उठा कर ले आयेगा।

गैरीब चैन्ड, अब हम दो भाई इस जाहिल लोगों के कंट्री में नहीं रहेगा। हम माइगरेट करके कनाडा जा रहे हैं। अब हमारा रिटर्न नहीं होना मांगटा है।
हम नया विलायती चूहा पालेगा जो केवल नायलोन और फाइबरगलास के कपड़े कुतरेगा।
तुम यहां बैठ कर खादी ग्रामोद्योग के कपड़े कुतरना।
भाइयों ! ठहरो ! इतनी जल्दी मत करो। ठंडे दिमाग से हम तीनों मिल कर मेहमानों की बाढ़ को आने से रोक सकते हैं। आपको फौरन जाने की ज़रूरत नहीं।

चूहे पुरानी दोस्ती का लिहाज कर हम तेरी बात मान रहे हैं लेकिन तुझे दो दिन के अन्दर २ कोई फार्मूला खोज कर निकालना है।जिससे लाठी भी न टूटे और सांप भी मर जाये। मेहमान भी न आयें और रिश्तेदार भी नाराज न हों। हम अपने इम्पोर्टेड सूट उतार रहे हैं लेकिन सूटकेस नहीं खोलेंगे। किसी भी वक्त रवाना होने के लिये तैयार रहेंगे।
मैं अकेले ही तरकीब थोड़े खोज निकालूंगा ? हम तीनों बैठ कर सोच विचार और उच्च स्तरीय मीटिंग करेंगे। कॉफी पियेंगे ! सिगरेट और बीड़ियों की आहुति देंगे। यह एक महायज्ञ होगा।
हेक आइडिया तो मेरे दिमाग में आया है। हम दोनों में से एक मरेगा। मान लो मैं मर जाता हूं। थम गांव वालों को खबर कर देना कि सिलबिल मर गया है और आप उसकी अस्थियां लेकर हरिद्वार जा रहे हैं।
यह आइडिया नहीं चलेगा, थमारे मरने की खबर गई तो सारे रिश्ते इकट्ठे हो जायेंगे। जिसको न आना होगा वह भी आयेगा। यहां के लोगों की यह आदत है कि कोई मर जाये तो वहां लोग ऐसे ही इकट्ठे हो जाते हैं जैसे डगर के खेत में मरने पर गिद्ध, चील, कव्वे, गीदड़ लोमड़ और सियार इकट्ठे हो जाते हैं।
भजनलाल, बंसीलाल हरद्वारी लाल और देवी लाल भी आयेंगे।
बच्चा लोग ताली बजाओ और मेरे साथ जोर से बोलो 'गिली गिली पू' गरीब चन्द की खोपड़ी में एक तरकीब आई है जो जरूर हमारी समस्या हल कर देगी।
हम सारे रिश्तेदारों को लैटर लिखेंगे ! लैटर पढ़ते ही उनकी सिट्टी पिट्टी गुम हो जायेगी—नानी मर जायेगी। पत्र का विषय कुछ ऐसा होगा—
आदरणीय फूफा राम जी,
पिलपिल सिलबिल का बौत-बौत करके चरण वन्दना ! फूफी, चाचा, और भाई भतीजों को दोनों का हाथ फेबीकोल से जोड़ कर नमस्ते। आगे हाल यह है कि आपका खत मिला पता लगा आप २६ जनवरी देखने म्हारे पास, आना चाहते हैं।
'आप हमारी थ्री बैड, ड्राइंग डाइनिंग, किचन पेन्टरी, गैराज, सर्वेन्ट क्वार्टर और लान वाली कुटिया को अपने चरणों से पवित्र करते तो म्हारा जीवन धन्य हो जाता। आप लोगों की सेवा करके लोक पर लोक सुधार लेते। लेकिन हाय फूफा जी, हम दो पापी बदकिस्मत हैं। लिखते हुये कलेजा मुंह को आता है। हम दोनों को एनकेटी प्रीटेन्डस नाम की खतरनाक बीमारी हो गयी है . . .
. . .हमारे सारे शरीर में खुजली और फोड़े हो गये हैं। जो हमारे नजदीक आता है उसे कोढ़ निकल आता है और छः दिन में मर जाता है। हमारी सांस जहरीली हो गयी है। हमारे आधे किलोमीटर के दायरे में आने पर टी. बी. हो जाती है। डाक्टर कहता है हमारी बीमारी ठीक होने में छः महीने लगेंगे तब तक किसी को एक किलोमीटर से नजदीक न आने देना . .

सिलबिल पिलपिल के कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

भारतीय टैस्ट खिलाड़ी जो केवल एक टैस्ट खेले

	पारियां	रन	उच्चतम	कैच	स्टम्प	विकेट	रन प्रति विके
1. अमीर इलाही	2	17	13	—		—,	--
2. ए. आप्टे	2	15	8	—	—	—	
3. एस बैनर्जी	1	0	0	3	—	5	36.20
4. एस. एन. बैनर्जी	2	13	8	—	—	5	25.40
5. बाल दानी	—	—	—	1	—	1	19.00
6. एच. गायकवाड़	2	22	14	1	—	1	—
7. एम. जे. गोपालन	2	18	11	3	—	1	39.00
8. एल. पी जय	2	19	19	—	—	—	
9. आर जमशेद जी	2	5	4	2	—	3	45.67
10. जयन्तीलाल	1	5	5	—	—	—	
11. लाल सिंह	2	44	29	1	—	—	—
12. मेहर होमजी	2	0	0		—	—	—
13. निहाल चन्द	2	7	6	—	—	3	32.33
14. ए. पाई	2	10	9	—	—	2	15.50
15. आर. पाई.	2	6	3	—	—	0	
16. एच. पटियाला	2	84	80	2	—	—	
17. एस आर पाटिल	1	14	14	1	—	2	25.50
18. रायसिंह	2	26	24	—	—	—	
19. राजेन्द्रनाथ	—	—	—	1	3	—	
20 एल. रामजी	2	1	1	1	—	—	
21. एम. रेमे	2	15	15	1	—	—	
22. आर. सक्सेना	2	25	16	—	—	—	
23. ऐ. के. सेन गुप्ता	2	9	8	—	—	—	
24. एम. एम. सूद	2	3	3	—	—	—	
25. केकी तारा पोर	1	2	2	—	—	—	
26. बागा जिलानी	2	16	12	—	—	—	
27. वी. एन. स्वामी	—	—	—	—	—	—	
28. सी. टी. पांतकर	2	14	13	3	1	—	

फैण्टम-जंगल शहर

रस्से वाले लोगों के संसार में।
वह कौन है ?
मेरा ख्याल है मैं जानता हूं, रेक्स।

जंगल का राक्षस, जिससे तुमने बहुत समय पहले युद्ध किया था, अब तो यह देख भी नहीं सकता हमने इसे बताया था तुम यहां हो।

फैन्टम . . .
यह मेरे पिता से लड़े थे।

फैन्टम अपने पिता के प्राचीन शत्रु से मिलता है।
फैन - टम . . .
!

मैंनेअपने पिता और जंगल के राक्षस की कथा बचपन में सुनी थी।

अब उसे देख कर - अभी तक जीवित देख कर, मैं हिल सा गया।

नया चांद निकलने तक के लिये विदा . . .
गुड बाई . . गुड बाई . . .
यह लोग हैं अच्छे।

तुम्हारे पिता इस राक्षस से लड़े थे, हो सकता है तुम्हारे पिता अभी भी जीवित हों।
हम फैन्टम कभी बूढ़े नहीं होते, रेक्स!

तुम्हारा मतलब तुम सदा जवान ही रहोगे ?
नहीं मेरा मतलब, यह नहीं है।

पूर्ण चन्द्रमा की रात्रि को . . .
रस्से वाले लोग ऊंचे पेड़ों पर बड़ी तेज़ी से चलते हैं जैसे कि पृथ्वी पर लोग भागते हैं।

थकने पर वे सो जाते हैं।
Zzzz
पूरा चन्द्रमा . . .मुझे आज रस्से वाले लोगों से मिलना है. रेक्स, चलोगे ?
हाँ बात क्या है ?

दीवाना वर्ग पहेली इनाम १०रु

बायें से दायें

१. छत पर लगे दो हुकों के बीच डंडी लगा कर बैठ जाओ। (२)

३. ट्राम्बे के आखिर से शुरू हो अंतरीप के शुरू तक कोई ओर छोर नहीं है। (३)

६. अगर यह मार गया तो हिलना मुश्किल होगा। (३)

८. आधे मांगो तो सिका मिलेगा। (२)

९. सादा रम ले और उसे खूब हिला कर चटपटा बना। (५)

१०. बिना छड़ी के ग्रुप पर लगा टैक्स ? (२)

११. अगर असली भेद जानना चाहते हो तो इसे पकड़ो। (२)

१३. यह गोष्ठा महीना पीछे हुइ और अंत में किसी को खुशी नहीं हुई। (४)

१५. एक देश में आंतम रात हो तो सबसे बढ़िया होगा। (५)

ऊपर से नीचे

१. आनाकानी करते हुये बात गोल करना। (५)

२. वर्ष से पहले ऊपर चाकू चल जाये तो पैसे बनेंगे ? (४)

४. इस शहर में बिजली की सप्लाई न होने के कारण सारा काम चौपट हो रहा था ? (३-३)

५. सात लाकरों में नीचे क्या है ? (२)

७. ग्वाले से संबंधित ? (२)

१२. दिल लेकर अदालत आने का न्यौता (३)

१३. योग में मदद चाहिये तो साथ यह होना चाहिए (२)

१४. अंत में अकस्मात मिली पराजय। (२)

अन्तिम तिथि—२०-९-८१

रविन्द्र सिंह, IX/४२६२, अजीत नगर, गली नं. ९, दिल्ली-३१, १५ वर्ष, डाक टिकट, ड्राईंग करना।

कैफी नहीम 'अनोखा' द्वारा मोई-नउद्दीन अहमद साहिब गंज (उ.प्र.) १८ वर्ष।

जगदीश प्रसाद गुप्ता, गुप्ता फोटो स्टूडियो, हाई स्कूल रोड, लक्ष्मण गढ़ (अलवर) २६ वर्ष।

खत्री किशन जेठानन्द, बैरक नं. ९३७, सैक्शन २१, गीता प्रेस के पास, उल्लास नगर-३, १७ वर्ष

पारस डांगी, महावीर फेन्सी ज्वैलर्स, १५९, मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास-१, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता

विनय कुमार गुप्ता, लाहौरी टोला, भागलपुर, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, खेलना, कूदना।

रोहित कुमार मिश्रा, न्यू एरिया डेहरी-ऑन-सॉन (बिहार), १४ वर्ष, क्रिकेट, दीवाना पढ़ना।

रमेश कुमार सिघांनियां, मूली रोड धनबाद, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना। कामेंट्री सुनना।

रमेश चन्द्र कुमार अवै. सचिव, नवचेतना क्लब लारेंस रोड, दिल्ली-२५, २८ वर्ष, समाज सेवा।

सनत् कुमार दास, कृष्णपुर, पो. राजनगर, जि. सिंहभूमि (बिहार), १९ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

राजेश कुमार गोस्वामी द्वारा श्री मदन गोस्वामी राज बाड़ी रोड, प्रो. झरिया जि. धनबाद (बिहार)।

प्रदीप, रैक्बर्ट, मिशन सहारनपुर १६ वर्ष. कराटे फाइटिंग

धनश्याम शर्मा मौहल्ला बांस नारल हरियाणा, २९ वर्ष, पढ़ना व खेलों में भागा लेना।

योगेश वी. माथुर, विसन्स एन्टर-प्राईजेज ३४, १७ जी, हास्पिटल बैडमिन्टन खेलना।

पंकज गीदड़ा, गीदड़ भवन, सेवक ७८, सिलीगुड़ी १५ वर्ष, पत्र-मित्रता।

सिकन्दर आजम, बी. एन, झा रोड मुरारपूर, गया, पांच किगली बिहार १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

अशोक कुमार (मेहता) ४ विरा-पन्न स्ट्रीट, मद्रास-१, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता।

राधेश्याम बंसल, सुधा इन्डस्ट्रीयल कारपोरेशन, ११-मीरा मार्ग, नई दिल्ली, २१ वर्ष

पुरुषोत्तम सिंह चौहान, १८ वर्ष, कामगढ़ कैन्ट, बंगालीटोला जि. हजारी बाग, बिहार, गरीब अनाथ।

अनूप शर्मा, १९/२ बी, शक्ति नगर, २० वर्ष, पंतग उड़ाना, पढ़ना।

सुरेन्द्र कुमार मानघर ७/५५९, मरुटोल, काठमांडों, नेपाल, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

रणवीर सिंह तंवर WZ-१३१७, नांगल राय, नई दिल्ली-४६, २४ वर्ष, क्रिकेट, वालीबाल।

बाबूलाल नायक (डी) मु/पो- सरायपाली जि. रायपुर (म.प्र.) २० वर्ष, पत्र-मित्रता एवं संगीत

राज कुमार, ५४ स्टेट बैंक कालोनी, जी. टी. रोड, दिल्ली-११०००२, १६ वर्ष, पुस्तकें पढ़ना।

अरुण रघुवंशी, १/१४१ केलरोल चिमाननी काठमांडौ (नेपाल) १६ वर्ष, विदेश घूमना।

अमित मदान, शालु स्टुडियो जीन्द, २३ वर्ष, (फोटोग्राफ, पत्र मित्रता गाने सुनना, गाना गाना।

पंडित मेवा लाल परदेशी महत-वाना पुरा, महोबा (उ.प्र.) २५ वर्ष, पत्रों के जवाब देना।

बलीराम धर्मानी, राजेश किराना स्टोर्स, बैरन बाजार, रायपुर, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

अनिल पुरी ७ डी/१२४, गुड रौड सीपरी बाजार, झांसी, १७ वर्ष, मोटर साइकिल चलाना।

अशोक कुमार १८१/१० भोला नाथ नगर, शाहदरा दिल्ली-३२. १९ वर्ष, फिल्में देखना

कमाल अरशद, क्वाटर नं. ६३बी, सागोल, दानापुर, पटना, १२ वर्ष, पत्र-मित्रता

सनत अखौरी द्वारा बी. सी. सिन्हा, एडवोकेट जेल के नजदीक, गिरिडीह-८१५३०१; १५ वर्ष, पढ़ना

देवाशीष "अकेला" १८/१० बीरनराय रोड कलकत्ता-३४ (वेस्ट) १७ वर्ष, पत्र मित्रता,

रवि चौधरी ३५, जरनेली कालोनी करनाल-१३२००१, २३ वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना।

आबिद हुसैन 'राजू' ४९, जूनापीठा मेवरोड इन्दौर (म.प्र.) १९ वर्ष, फिल्में देखना।

चंद्रकांत कुलकर्णी, एस. टी. जनरल स्टोअर्स, बंसस्टैंड जासना (महाराष्ट्र) १९ वर्ष।

शैलेन्द्र सिंह ६/९ शिव नगर. कालोनी, अल्लापुर, इलाहाबाद, २० वर्ष, पत्र-मित्रता।

प्रदीप कुमार गुप्ता द्वारा बी. आर. गुप्ता, मेन रोड बालागंज, होशंगाबाद (म.प्र.) १४ वर्ष, पत्र-मित्रता

रूबी मदान स्टुडियो शालु, जीन्द, २५ वर्ष, फोटोग्राफी, क्रिकेट खेलना फिल्में देखना

सुरेश कुमार बुधवानी, होलीक्रास स्कूल के पास, बैरन बाजार, रायपुर (म.प्र.) १६ वर्ष

हमारा पता: दीवाना फ्रैंडस क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२. कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ——————

पता ——————

आयु ——— शौक ———

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रैस नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

दीवाना—कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं. २२ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—सुखजीत सिंह बजाज—नई दिल्ली
द्वितीय पुरस्कार—मुकेश कुमार —दिल्ली
तृतीय पुरस्कार—इन्द्रजीत ग्रोवर—जालन्धर शहर

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. चतरसिंह-बम्बई, २. कुमार अभिताभ—रोहतास (बिहार), ३. आशा मित्तल—जयपुर, ४. रमानी भगवन्ती सजनदास—अहमदाबाद, ५. नासिर हुसैन ए. लतीफ सुराती—सूरत।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. राजन शर्मा—सोलन, २. कुलविन्दर सिंह—सुधियाना, ३. राजेश नागपाल—दिल्ली, ४. नीलेश जायसवाल—कानपुर, ५. वरुन मोहिन्द्र—नई दिल्ली.

सर्टीफिकेट

१. जसपाल सिंह—नई दिल्ली, २. अंजना कुमारी सिन्हा—डाल्टनगंज, ३. अशीम मलहोत्रा—नई दिल्ली, ४. पूनमगर्ग-गाजियाबाद ५. मनोज कुमार गुप्ता—नई दिल्ली, ६. आर वर्मा—कलकत्ता. ७. मनोज कुमार पोद्दार—रायपुर, ८. पंकज कुमार—जीन्द, ९. जगजीत कौर—मेरठ केन्ट, १०. राजेश द्विवेदी—छिंदवाड़ा।

दीवाना के अंक २१ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

सं	सं	द	भ	व	न
चौ	रा	■	ज	न	क
र	स	पा	न	■	ली
सां	र	स	■	हिं	मा
ध	■	■	स	र	ल
नं	य	न	बा	ण	■

(निर्णय लादरी द्वारा)

विजेता—संजीव कुमार अग्रवाल,
सतीश ट्रेडिंग कारपोरेशन,
५ गजराज मेन्सन, बिस्टुपुर,
जमशेदपुर-१.

दीवाना-कैमल
रंग प्रतियोगिता
निःशुल्क प्रवेश
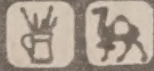
पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम १० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना - आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०
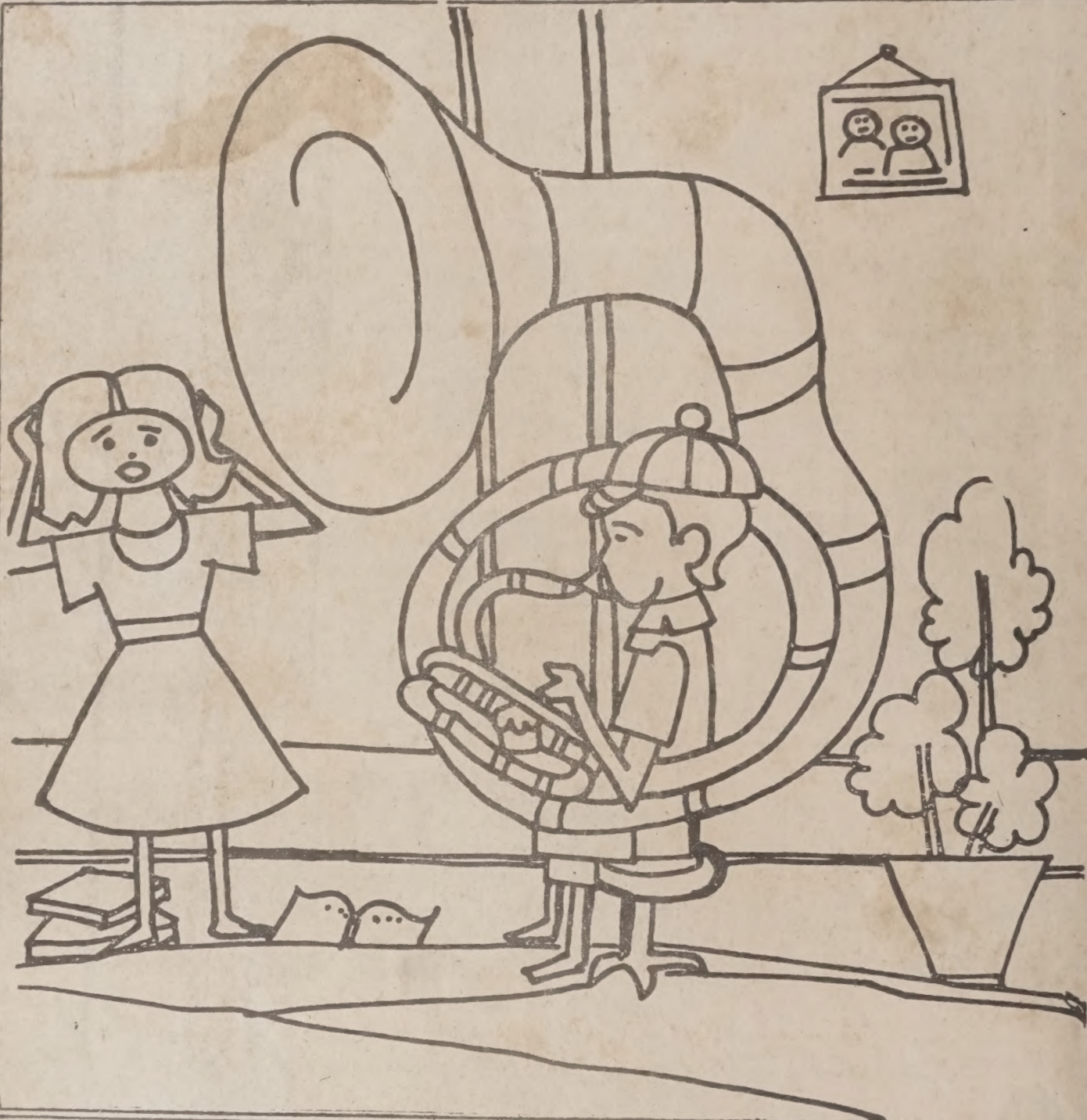
केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जावे।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: १५.२.८२

CONTEST NO.23